अखिल भारतीय पल्लीवाल जैन महासभा का मुख पत्र

₹5

श्री पल्लीवाल जैन पत्रिका

सामाजिक चेतना एवं जागरुकता के लिये सजग मासिक पत्रिका

(पल्लीवाल, जैसवाल, सैलवाल सम्बन्धित जैन समाज)

अंक 6 ✦ प्रकाशन तिथि : 25 दिसम्बर 2019 ✦ वर्ष 8 ✦ कुल पृष्ठ 44 ✦ मूल्य ₹5

नव वर्ष की मंगल कामना

तृतीय पुण्य तिथि पर
सादर श्रद्धांजलि एवं शत्-शत् नमन

स्व. श्री स्वरूप चन्द जी जैन (मारसन्स)

(19 अगस्त 1927 – 31 अगस्त 2016)

जैन समाज के लिये आपका योगदान एवं समाज को एक सूत्र में बांधे रखने का अन्तिम सन्देश सदैव स्मरणीय रहेगा।

आपका प्रेरणामय जीवन हमारे लिए सदैव पथ प्रदर्शक रहेगा।

MARSON'S
ISO 9001:2000 CERTIFIED COMPANY

समस्त परिवारीजन
स्टाफ एवं कर्मचारीगण

MARSON'S ELECTRICAL INDUSTRIES
(Prop. MEI Power Pvt. Ltd.)
www.marsonselectricals.com • E-mail : info@marsonselectricals.com
1/189, Delhi Gate, Civil Lines, Agra-282002 (India)
Ph : +91-562-2520027, 2850812 • Fax : +91-562-2851306
Works :
Mathura Road, Artoni, Agra - 282007 (India)
Ph : +91-2641448, 2642327-28 • Fax : +91-562-2641435

TRANSFORMERS EXPORTED TO OVER 15 COUNTRIES

सामाजिक चेतना एवं जागरुकता के लिये सजग

श्री पल्लीवाल जैन पत्रिका

अखिल भारतीय पल्लीवाल जैन महासभा का मुख पत्र

(पल्लीवाल, जैसवाल, सैलवाल सम्बन्धित जैन समाज)

email : shripalliwaljain.patrika@gmail.com

मूल्य ₹ 5/-

अंक 6 ✦ 25 दिसम्बर 2019 ✦ वर्ष 8

कुल पृष्ठ : 44

पूर्व प्रकाशन मथुरा से, सम्प्रति जयपुर से प्रकाशित

महासभा पदाधिकारी

श्री आर.सी. जैन *(अध्यक्ष)*
(सेवानिवृत्त आई.ए.एस.)
एन-19, आदिनाथ नगर, जे.एल.एन. मार्ग,
जयपुर (राज.)-302018
मोबा. : 9414279070, 9829999335
E-mail : rcjainras@gmail.com

श्री राजीव रतन जैन *(महामंत्री)*
301-ए, सुख सागर अपार्टमेन्ट, 4, जानकी नगर मेन,
इन्दौर (म.प्र.)-452001, मोबा.: 9425110204
E-mail : jainrajeevratan@gmail.com

श्री अजीत जैन *(अर्थमंत्री)*
1द39, काला कुंआ हा.बोर्ड, अलवर (राज.)-301002
फोन : 0144-2360115, मोबा.: 9413272178
E-mail : akjain2021@yahoo.in

पत्रिका प्रबन्ध एवं सम्पादक मण्डल

डॉ. अनुपम जैन *(परामर्शदाता)*
'ज्ञानछाया', डी-14, सुदामानगर, इन्दौर-452009
फोन : 0731-2797790, मोबा.: 9425053822
E-mail : anupamjain3@rediffmail.com

श्री चन्द्रशेखर जैन *(संयोजक)*
86, मगन विला, श्री विहार कॉलोनी, होटल क्लार्क
आमेर के पीछे, जे.एल.एन. मार्ग, जयपुर-302018
फोन : 0141-2553272, मोबा.: 9829134926
E-mail : csjain30@yahoo.co.in

श्री प्रकाश चन्द जैन *(सम्पादक)*
78, बैंक कॉलोनी, महेश नगर विस्तार ''बी''
गोपालपुरा बाईपास, जयपुर-302015
मोबा.: 9828374013
E-mail : pcjain49@gmail.com

श्री पारस जैन गहनौली *(सह-सम्पादक)*
बी-204बी, 10-बी स्कीम, गोपालपुरा बाईपास,
जयपुर-302018, मोबा.: 9928715869

श्री महेश चन्द जैन *(अर्थ संयोजक)*
36-सी, कृष्णा विहार विस्तार, गोपालपुरा बाईपास,
जयपुर-302015, मोबा.: 9828288830
E-mail : 3466mahesh@gmail.com

संयोजक की कलम से....

मंजिल तक पहुंचने की दौड़

जैन मुनि आचार्य विद्यासागर महाराज का महाकाव्य 'मूकमाटी' में लिखा है कि सम्पूर्ण सुख की तलाश से बड़ा तनाव मनुष्य की जिन्दगी में और कोई नहीं है। इस बात की गहराई में जावें और इसे सम्पूर्ण समाज के नेतृत्व को देखें तो हम पायेंगे कि व्यक्ति समाज के नेतृत्व को प्राप्त करने के लिये अपना तन-मन-धन के साथ-साथ दूसरे शब्दों में कहें तो साम-दाम-दण्ड भेद के माध्यम से वह उस नेतृत्व को प्राप्त करता है। लोक लुभावने वादे एवं सपने समाज के सामने रखता है और जब वह उस पद को प्राप्त कर लेता है तो उसके मन में स्वयं के अलावा अन्य चीजें गौण हो जाती हैं। वह स्वयं को उसका कर्ता धर्ता समझता है और तो और उस नेतृत्व को पाने में जिन लोगों का मार्गदर्शन एवं सहयोग उसे मिला वह उसे भी भुला देता है जिसका परिणाम कभी अच्छा भी हो सकता है और कभी बुरा भी हो सकता है लेकिन यह निश्चित है कि वह व्यक्ति अपने साथियों से अवश्य दूर हो जाता है।

इसके विपरीत मनुष्य जो भी पद प्राप्त करता है उसे उसकी आचार संहिता, उसके कार्य करने की प्रणाली एवं व्यक्तियों के साथ सहयोगियों का मार्गदर्शन प्राप्त करते रहने से वह एक सफल नेतृत्व का धनी होता है तथा सभी स्थानों पर उसकी प्रतिष्ठा एवं कार्य प्रणाली को प्रमुखता मिलती है।

समाज को सर्वोच्च स्थान पर पहुंचाने में सभी बन्धुओं का योगदान होता है वे सभी मिलकर प्रयास करते हैं और एक कड़ी से दूसरी कड़ी को जोड़कर नेतृत्व को समाज उपयोगी बनाते हैं। शिकायतें एवं आलोचना सदैव बनी रहेगी तो भी नेतृत्व को अपने व्यवहार से उसका सामना करना होगा यदि प्रबन्धक के रहते उसके आधीन कार्यरत कर्मचारी सही कार्य नहीं करते अथवा अच्छा व्यवहार नहीं करते तो हम व्यवस्थापक की कार्यप्रणाली पर प्रश्न चिह्न लगायेंगे लेकिन कर्मचारियों को व्यवस्थापक के ऊपर के नेतृत्व का वरदहस्त प्राप्त है तो यह व्यवस्थापक की जिम्मेदारी पर प्रश्न चिह्न होता है। अतः सम्पूर्ण समाज के दृष्टिकोण में हमें सभी व्यक्तियों को समान आदर देते हुए एक निश्चित लक्ष्य की प्राप्ति हेतु एक राह को पकड़ना चाहिये तो हम पायेंगे की लक्ष्य सदैव हमारे नजदीक होगा और हमारी मंजिल हमारे पास होगी।

एक विचारणीय विषय है।

-आपका चन्द्रशेखर जैन

भावभीनी श्रृद्धांजलि

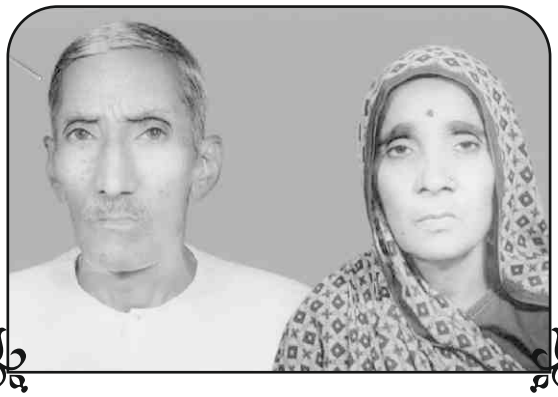

पूजनीय पिताजी स्व. श्री प्यारेलाल जी जैन चौधरी
श्रद्धेय माताजी स्व. श्रीमती असरफी देवी जी जैन
(मूल निवासी - मौजपुर, अलवर)

स्व. श्रीमती इन्दु जी जैन
(धर्मपत्नी श्री पदम चन्द जैन)
(स्वर्गवास : 30.12.2018)

हम सभी परिवार के सदस्य सादर श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुये भगवान वीर से उनकी चिर आत्मीय शांति की प्रार्थना करते हैं।

श्रद्धावनत

पुत्र :
पदम चन्द जैन
पौत्र-पौत्रवधु :
पारस जैन-रश्मि जैन,
पौत्री-दामाद :
डिम्पल-राजेश जैन
सिम्पल-नितिन जैन
प्रिती-उत्तम कोठारी
पड़पोत्री-पौत्र :
चेल्सी जैन-अक्षत जैन

पुत्र :
अनूप चन्द जैन
पौत्र-पौत्रवधु :
हेमन्त जैन-मधु जैन
पौत्री-दामाद :
सुनिता-सुनिल
अनिता-परवेश
विनिता-प्रताप
पड़पौत्र :
रोबीन-मानस

निवासः- बी-52, कीर्ति नगर, टोंक रोड, जयपुर
फोन : 0141-2706317, 9829066317, 9414055855

महासभा की प्रासंगकिता अब और अधिक

अखिल भारतीय पल्लीवाल जैन महासभा के प्रणेता डॉ. क्रांतिकुमार जैन से महासभा की स्वर्ण जयंती के अवसर पर महासभा के भू.पू. महामंत्री श्री अशोक कुमार जैन द्वारा लम्बी बातचीत की गई। श्री पल्लीवाल जैन पत्रिका के सुधी पाठकों के लिए डॉ. क्रांति कुमार जी जैन का जीवन दर्शन और विचार प्रस्तुत है। *-सम्पादक*

आप अपने जीवन के बारे में कुछ बताऐं। आपके मन में पल्लीवाल जैन समाज को संगठित करने का विचार कैसे आया और संगठन को खड़ा करने में किन कठिनाईयों का सामना करना पड़ा, इस कार्य में आपको समाज के किन लोगों का साथ मिला।

मेरा जन्म 4 अक्टूबर 1930 में श्री अमीर चन्द जैन एवं श्रीमती असरफी देवी जैन के यहां हुआ। मैं अपने माता–पिता की पहली संतान था। मेरी 10वीं तक की शिक्षा जयपुर में ही हुई, ग्याहरवीं क्लास में मैने करण नरेन्द्र सिंह कृषि महाविद्यालय जोबनेर में कृषि विज्ञान के वैकल्पिक विषय के साथ दाखिला ले लिया। यहां से बारहवीं (इंटरमीडिएट) परीक्षा उतीर्ण कर राजा बलवन्त सिंह राजपूत कालेज आगरा से बीएससी कृषि विज्ञान में करने के बाद, राजस्थान सरकार के कृषि विभाग में सुपरवाईजर के पद पर नियुक्त हो गया। 1951 में मैंने सरकार से स्टेडी लीव लेकर 'पूसा इंस्टीट्यूट' दिल्ली से एम.एस.सी. एवं पी.एच.डी बोटनी (वनस्पति शास्त्र) में की। राजस्थान सरकार के कृषि विभाग में विभिन्न पदों पर रहते हुए 1984 में निदेशक कृषि अनुसंधान के पद से सेवानिवृत हुआ।

1968 में मेरी पोस्टिंग कोटा में हुई जहां मुझे कई समाजों की सभा सोसाइटियों में जाने का मौका मिला। मेरे मन में विचार तो पहले भी आते रहे, परन्तु कोटा में– मुझे मन में उपजे विचारों पर मन्थन करने का पूरा मौका मिला। मैं सोचता विचारता था जब माली जाति, नाई जाति, नाईक समाजों ने अपने–अपने सामाजिक संगठन बना रखे हैं तो पल्लीवाल जैन समाज का भी एक सामाजिक संगठन होना ही चाहिए।

मैंने समाज के अनेकों बन्धुओं से सम्पर्क साधा जिनमें से कोटा के– श्री मोतीलाल जी जैन, मनमोहन जी, घनश्याम जी, नेमीचन्द जी, जयपुर के– श्री जुगलकिशोर जी, श्री कुन्दनलाल जी, मंगत राम जी, श्री श्यामलाल जी गुणवाले, आगरा के– मास्टर प्रताप चंद जी, गोरधनदास जी, बृजेन्द्र कुमार जी, गिरराज किशोर जी, अलवर के– श्री हरिराम जी कोठारी, श्री चिम्मन लाल जी, नोगांव के– श्री महावीर प्रसाद जी सरपंच, खेडली के– श्री हजारी लाल जी, अजमेर के– श्री श्याम लाल जी जैन कपड़वाले, श्री प्रेमचन्द जी जैन, ग्वालियर के– श्री भोलानाथ जी, श्री पातीराम जी आदि से सम्पर्क साधा, सभी ने मेरे विचार को पूरा समर्थन दिया। सभी समाज के बन्धुओं ने विचार कर यह तय किया कि हम सभी लोग भरतपुर में स्थित महावीर भवन में मिलेंगे।

आप समझ सकते हैं कि अब मेरी उम्र 90 वर्ष के लगभग हो गई है, बहुत सारी बातें मैं भूल जाता हूं, अनेकों उस समय के साथियों और बन्धुओं के नाम याद करने पर भी याद नहीं आ पाते हैं भरतपुर में किस दिन किस तारीख को मिलने का तय हुआ यह मुझे अब स्मरण नहीं आ रहा, मुझे ऐसा कुछ कुछ अन्दाज लगा कर बताता हूं कि दिसम्बर 1968 या फरवरी 1969 रही होगी। मुझे ऐसा याद आता है कि उस समय सर्दियों के

दिन थे।

महावीर भवन, भरतपुर में सभी बन्धुओं ने पल्लीवाल जैन समाज का एक संगठन बनाए जाने की आवश्यकता को स्वीकारा और वहीं पर अखिल भारतीय पल्लीवाल जैन महासभा की नींव पड़ गई। अलवर के माननीय श्री हरिराम जी कोठारी को कार्यकारी अध्यक्ष चुना गया और मुझे महामंत्री। महासभा के रजिस्ट्रेशन आदि की जिम्मेदारी मुझे ही दी गई। भरतपुर में ही यह तय किया गया कि रजिस्ट्रेशन आदि की प्रक्रिया पूरी किये जाने के उपरान्त समाज का अधिवेशन अलवर में आयोजित किया जायेगा। अधिवेशन कराए जाने की पूरी जिम्मेदारी श्रीमान हरिराम जी कोठारी ने अपने ऊपर ले ली। महासभा का विधिवत प्रथम अधिवेशन अलवर में हुआ। इस अधिवेशन में संगठन की रूप रेखा, उद्देश्य, विस्तार की योजना, कार्यप्रणाली के तौर तरीकों आदि पर गंभीर मंथन हुआ और अलवर अधिवेशन में ही महासभा के प्रथम पूर्णकालिक अध्यक्ष एवं महामंत्री का चुनाव, चयन, मनोनयन जो भी आप उचित समझे हुआ। महासभा के प्रथम अध्यक्ष के रूप में डॉ. किशनचन्द जी जैन और महामंत्री के रूप में मेरा मनोनयन किया गया।

अलवर अधिवेशन में ही यह भी तय किया गया कि समाज के लोगों में संगठन की सूचनाएं पहुंचाने के लिए एक बुलिटन, पम्पलेट या मैगजीन का प्रकाशन किया जाये, जिसका नाम श्री पल्लीवाल जैन पत्रिका रखा जाए।

महासभा के गठन के पीछे आपका मन्तव्य क्या था, महासभा के गठन से समाज में कैसे परिवर्तन की आवश्यकता आप महसूस करते थे मेरा तात्पर्य है कि महासभा किन उद्देश्यों की पूर्ति के लिए बनाई गई?

पल्लीवाल जैन समाज ज्यादातर गांव में बसा हुआ था आपस में एक दूसरे बन्धुओं का बहुत अधिक सम्पर्क नहीं था। सम्पर्क की कमी के कारण संवाद की स्थिति भी नहीं बन पाती थी, सम्पर्क का घेरा बढ़ाने की तड़प तो थी लेकिन स्थिति–परिस्थिति नहीं बन पा रही थी। महासभा से पहले भी समाज के जागरूक बंधुओं ने समाज को संगठित करने के प्रयाय किये थे। जागरूकता और समन्वय के अभाव में ये प्रयास असफल हो गये। हमने पल्लीवाल जैन समाज के हर सदस्य को महासभा से जोड़ने के संकल्प के साथ महासभा के उद्देश्यों ''समाज में भाईचारे का विकास, प्रेम और सौहार्द बढ़ाने के प्रयासों पर बल देते हुए, आपसी सहमति से समाज में पनपी कुरितियों को समूल नष्ट करने, समाज के सर्वांगीण विकास के लिए आपसी सहयोग बढ़ाने, देश भर में पल्लीवाल जैन समाज को जोड़ने के ध्येय संकल्प रखते हुए महासभा के संगठनात्मक विकास के लिए अपने सकारात्मक प्रयास प्रारंभ कर दिये। मैनें गांव–गांव का दौरा किया समाज के सभी बंधुओं को महासभा से जोड़ने का प्रयास किया। कई स्थानों पर अत्यंत सकारात्मक सहयोग मिला तो कई जगह पर महासभा के संगठनात्मक पहलू को समझने का प्रयास भी नहीं किया गया। आगरा, अलवर, जयपुर, कोटा, भरतपुर, दिल्ली आदि स्थानों पर महासभा की शाखाओं का गठन हो गया। दिल्ली में शाखा तो बनी पर उन्होंने अपनी अलग पहचान बनाए रखने के हठ से पल्लीवाल जैन सभा दिल्ली के नाम से अलग संगठन खड़ा कर उसका रजिस्ट्रेशन भी करवा लिया। लेकिन महासभा का सकारात्मक सहयोग दिल्ली के पल्लीवाल जैन बन्धुओं के साथ बना रहा। इस सकारात्मक जुड़ाव में श्री जैनीलाल जी जैन, श्री सुरेश चन्द जी जैन का योगदान में कभी नहीं भूल सकता।

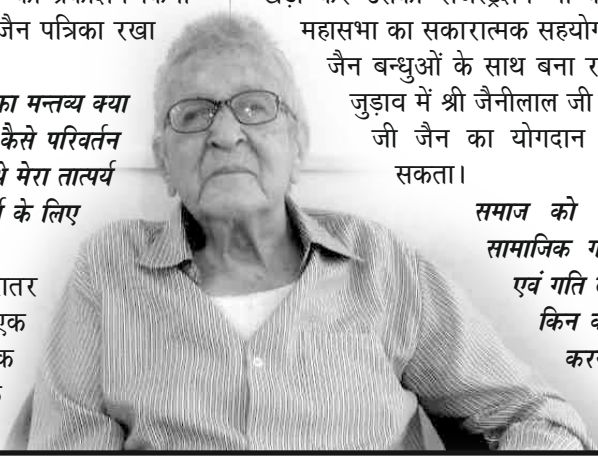

समाज को संगठित करने और सामाजिक गतिविधियों को दिशा एवं गति देने में आपको किन–किन कठिनाईयों का सामना करना पड़ा।

जैसा कि मैनें आपको पहले

समाज के सर्वांगीण विकास के लिए आपसी सहयोग बढ़ाने, देश भर में पल्लीवाल जैन समाज को जोड़ने के ध्येय संकल्प रखते हुए महासभा के संगठनात्मक विकास के लिए अपने सकारात्मक प्रयास प्रारंभ कर दिये। मैनें गांव-गांव का दौरा किया समाज के सभी बंधुओं को महासभा से जोड़ने का प्रयास किया। कई स्थानों पर अत्यंत सकारात्मक सहयोग मिला तो कई जगह पर महासभा के संगठनात्मक पहलू को समझने का प्रयास भी नहीं किया गया।

बताया था कि समाज के लोग अधिकाशंतः गांवों में बसे थे उनसे सम्पर्क करने के लिए उनके पास तक जाना होता था। यातायात के साधन बहुत सीमित थे बस और ट्रेन ही मुख्य साधन थे यह मुख्य स्थान पर तो जा सकते थे, परन्तु गांव में जाने के लिए साइकिल या पैदल, या बैलगाड़ी आदि ही साधन होते थे। मैनें बहुत सारे गांव में साइकिल से या पैदल यात्रा की। यह सत्य है कि किसी न किसी समाज के बन्धु का साथ अवश्य मिल जाता था। हम वहां जाते गांव के सभी बंधुओं को एक स्थान पर एकत्रित कर समाज को संगठित करने के विषय में बातचीत करते, महासभा के बारे में बताते और उन्हें महासभा से जोड़ने के लिए निवेदन करते थे। उनकी महासभा के प्रति उठने वाली जिज्ञासाओं का निदान भी करते।

कई जगह पर दिगम्बर–श्वेताम्बर की समस्या पैदा हो जाती, मैनें उन्हें भरसक समझाने का प्रयास किया कि महासभा विशुद्ध रूप से एक सामाजिक संगठन है, इस संस्था के दिगम्बर, श्वेताम्बर, स्थानक वासी सभी सदस्य रहेंगे। यह पल्लीवाल जैन समाज की संस्था है इसे हम किसी आमना के दायरे में बांध कर नहीं चल सकते। जगरोटी के पटोदा ग्राम में तो मुझे घेर लिया गया, लट्ठ बजाने लगे, मार–पीट तक की नौबत आ गई। मैं भी धरने पर बैठ गया मैं अपनी बात पर अड़ा रहा कि महासभा सभी पल्लीवाल जैन समाज की संस्था ही रहेगी, हम कोई भी ऐसा प्रस्ताव पास नहीं कर सकते जो किसी आमना विशेष की पक्षधर बन जाए। यह एक सामाजिक संस्था है और इसका स्वरूप हमेशा सामाजिक ही बनाए रखना है।

समाज के ज्यादातर लोग उस समय खेतीबाड़ी, छोटी–मोटी दुकानें, नौकरी में भी पटवारी या मास्टर कुछ लोग रेलवे में छोटे पदों पर नौकरी में थे, अतः धन की तंगी के कारण महासभा बहुत बड़े आयोजन करने में भी असक्षम थी। समाज में कुछ ही लोग समृद्ध और सामर्थ्यवान थे, उनकी कोई बहुत ज्यादा रुचि महासभा के कार्यक्रमों में बन नहीं पाती थी। अतः आर्थिक तंगी से महासभा हमेशा जूझती रही। आप इससे अन्दाजा लगा सकते हैं कि मैं 1984 में रिटायर हुआ। रिटायरमेंट के समय मुझे एक भी लीव इन केस के पेटे रुपया नहीं मिला, मेरी सभी छुट्टियां और जो मैं विदाउट पे छुट्टी लेता था वह सब महासभा के कार्यों से जगह–जगह पर दौरों के दौरान खत्म हो गई। हां यह सत्य है कि जहां जाता था वहां पर भोजन और सोने की व्यवस्था हो जाती थी।

आप महासभा के किन–किन पदों पर कब–कब और कितनी बार रहे?

मैं महासभा का तीन बार महामंत्री और दो बार अध्यक्ष रहा, महासभा में मेरा टोटल कार्यकाल या सेवाकाल 1969 से 1982 तक रहा। महासभा के वृक्ष को लगाने में संलग्न होने के नाते मेरी सक्रियता अभी भी बनी हुई है। अशोक जी, अरे हां आप जब महामंत्री बने तो उनके आग्रह पर मैंने हिन्डौन, बयाना, इन्दौर और नागपुर तक की यात्रा की, मेरी शारीरिक स्थिति ठीक न होने पर भी अशोक जी के आमंत्रण पर मैंने वह यात्राऐं की, उन्होंने मेरा बहुत ध्यान रखा मेरा मन भी महासभा की प्रगति देख कर प्रभुल्लित हो जाता है। हिन्डौन शहर के किसी स्कूल, कॉलेज में महासभा की कार्यकारिणी की जो बैठक हुई उसे देखकर मैं दंग रह गया, समाज के सभी बन्धु, मातायें, बहनें अत्यन्त अनुशासित तरीके से बैठक में शामिल हुए, मेरी पुरानी यादें इस वातावरण के बिल्कुल विपरित थी, परन्तु वहां जो मैंने देखा वह मेरे लिए अत्यन्त सुखद अनुभव था। अब तो मुझे कोई भी खबर आप जैसे लोगों के द्वारा ही मिल पाती है। मैं भूल जाता हूं, बैठे–बैठे लेटे–लेटे कई बार महासभा के पतन और उत्थान पर विचार अवश्य आते हैं, मुझे याद आता है कि एक बार तो महासभा कोर्ट–कचहरी के चक्कर में भी पड़ गई थी, तब मेरे पास समाज के कुछ बंधु आये थे और मैनें बीच में पड़कर और समझाईश के माध्यम से महासभा के उस पीड़ादाई

प्रक्रिया को समाप्त कराया था।

आपके विचार में क्या महासभा अपने उद्देश्यों को पूरा करने वाला एक सफल सामाजिक संगठन है।

नहीं– महासभा को जिन उद्देश्यों के लिए खड़ा किया गया था। उसमें कोई भी बहुत अधिक सफलता नहीं मिली, फिर भी जितना हुआ है वह सन्तोष के लायक है। सैलवाल–जैसवाल समाज के लोग पल्लीवाल जैन समाज में समाहित हुए। एक समय ऐसा था जब छीपी पल्लीवालों के साथ पल्लीवाल जैन समाज का कोई सम्पर्क नहीं था, आज छीपी पल्लीवाल जैन, पल्लीवाल जैन समाज का अभिन्न अंग है। मुझे नागपुर जा कर बहुत खुशी हुई। आपने नागपुर के पल्लीवालों को पल्लीवाल समाज का अभिन्न अंग बना कर महासभा से जोड़ा। देशभर के जैन समाज में अब पल्लीवालों की भी पहचाान होने लगी है। यह कोई छोटा–मोटा काम नहीं है, यह महासभा की बहुत बड़ी सफलता है। मुझे अच्छा लगता है कि आज पल्लीवाल जैन समाज में सम्पन्नता का बहुत विकास हुआ है। शिक्षा के क्षेत्र में भी पल्लीवाल समाज काफी आगे बढ़ा है। आज समाज में डॉक्टर हैं, इंजीनियर हैं, साइंटिस्ट है, प्रोफेसर, लेक्चरार, वकील, जज, आरएएस अफसर, आईएएस, आईपीएस छोटे–बड़े व्यापारी सभी हैं अतः मैं यह कह सकता हूं कि महासभा का उद्देश्य समाज के सर्वांगीण विकास का था उसमें बहुत अधिक सफलता मिली है। देखिए प्रयास तो व्यक्तिगत होते हैं परन्तु महासभा का जागरुकता फैलाने में योगदान कम नहीं आंका जा सकता। काम अभी भी बाकी है मेरी ऐसी मनोभावना है कि महासभा अपने कर्त्तव्य से विलग नहीं होगी। अपने सकारात्मक प्रयासों को गति देते हुए समाज के संगठन को और मजबूत करेगी।

मुझे नागपुर जा कर बहुत खुशी हुई। आपने नागपुर के पल्लीवालों को पल्लीवाल समाज का अभिन्न अंग बना कर महासभा से जोड़ा। देशभर के जैन समाज में अब पल्लीवालों की भी पहचान होने लगी है। यह कोई छोटा-मोटा काम नहीं है, यह महासभा की बहुत बड़ी सफलता है। मुझे अच्छा लगता है कि आज पल्लीवाल जैन समाज में सम्पन्नता का बहुत विकास हुआ है। शिक्षा के क्षेत्र में भी पल्लीवाल समाज काफी आगे बढ़ा है।

आपने महासभा के उद्भव और उत्थान के 50 वर्षों को बहुत नजदीक से देखा, भोगा और महसूस किया है। क्या वर्तमान स्थितियों में महासभा की कोई प्रासंगिकता बची है, जबकि संयुक्त परिवार टूट रहे हैं, विवाह उपरान्त आपसी विवाद और कलह बढ़ रही है समाज के नवयुवक एवं नवयुवतियां इतर समाजों में अपने वैवाहिक सम्बंध जोड़ रहे है।

जहां तक प्रासंगिकता का सवाल है यह वर्तमान स्थिति परिस्थितियों में और अधिक प्रासंगिक हो गई है। आपने कुछ पीड़ादाई मुद्दों का जिक्र किया है। आप इस बात को इस प्रकार समझने का प्रयास करें। दुनियां के विसंगति पूर्ण आचरण से पल्लीवाल जैन समाज भी अछूता नहीं रह सकता। मैनें विदेशों की कई बार यात्रा की है वहां पर स्वच्छंदता के साथ परिवारों की महत्ता टूट रही है। पश्चिमी संस्कृति स्वयंजीवी, स्वछंद प्रवृति की बन गई है। इस वैश्विक जीवन पद्धति का असर धीरे–धीरे भारत देश पर भी पड़ रहा है। जीवन शैली में परिवर्तन हो रहा है स्थिति और परिस्थिति भी बदल रही हैं। इस प्रदूषित मानसिकता ने सहनशक्ति को कमजोर किया है। मानदण्डों की नई परिभाषा लिखी जा रही है। व्यक्ति व्यक्तिवादी और स्वयंजीवी होता जा रहा है, सामाजिक प्रतिबध्यताओं का वजूद भी घट रहा है, अहंकार की भावना को समृद्धि ने और प्रगाढ़ किया है अतः सामाजिक सरोकारों पर इन प्रवृतियों का असर पड़ना स्वाभाविक है, तो भला पल्लीवाल जैन समाज इन विकृतियों से दूर कैसे रहा सकता है। मेरा मानना है कि इस सबके बावजूद सामाजिक संगठन चुप होकर नहीं बैठ सकते, उन्हें सामाजिक समरसता के समयानुकूल रास्ते ढूंढ़ने होंगे। पारिवारिक संस्कारों को समझाईश के साथ नई पीढ़ी को नये परिवेश के साथ देने की आवश्यकता है महासभा उसमें अपनी एक अहम भूमिका निबाह सकती है, जगह–जगह पर संस्कार शिविरों का आयोजन किया जाना चाहिए, संगठन को समाज के प्रति समर्पित भाव का अहसास कराते हुए और मजबूत बनाने का प्रयास करना चाहिए। किसी भी संगठन में पदाधिकारी बन कर अपने आप को प्रतिष्ठित समझने या महत्वपूर्ण व्यक्ति समझने की भूल न कर सेवा और सम्पर्ण की भावना का

समाज के अन्दर प्रदर्शन होना चाहिए। मेरी यह दृढ़ मान्यता है कि जिस समय महासभा का प्रादुर्भाव हुआ गठन हुआ, उस समय से आज 50 वर्षों बाद इस सामाजिक संगठन की आवश्यकता और अधिक बढ़ गई है। इसलिए निश्चय ही वर्तमान समय में महासभा की प्रासंगिकता और अधिक है।

पल्लीवाल जैन महासभा के वर्तमान स्वरूप के बारे में आपके क्या विचार और सुझाव हैं। महासभा की वर्तमान चुनाव व्यवस्था आज भी उतनी ही प्रासंगिक है जितनी आपके समय में थी?

महासभा जब हमने बनाई थी उस समय समाज के बहुत कम लोग इस संगठन के सदस्य बने थे हमने सदस्य संख्या को बढ़ाने के लिए बहुत प्रयास किये परन्तु इस क्षेत्र में हम महासभा की उपस्थिति दर्ज नहीं करा पाये, परन्तु हमारा भ्रमण और सम्पर्क, क्षेत्र के पल्लीवाल जैन भाईयों से बनने लगा था। महासभा के संगठनात्मक मॉडल को समाज समझने लगा था। मैंने सुना है कि आज तो महासभा के दस हजार से अधिक सदस्य बन गये हैं यह बड़ा सुखद और मन को प्रफुल्लित करने वाला संदेश है। यह निश्चय ही महासभा की सार्थकता का प्रतीक है, और संगठन की मजबूती का प्रसंग भी है। चाहे यह महासभा की आजीवन सदस्यता में वृद्धि चुनावों में विजयी होने की महत्वाकांक्षा से जुड़ी क्यों न हो। यह सन्देश समग्र रूप से आम पल्लीवालों में महासभा की स्वीकारता प्रकट करने वाली सुखद अनूभति भी है। मुझसे समाज के अनेकों महानुभाव मिलने आते रहते हैं देश भर में फैले हुए पल्लीवाल जैन समाज के बारे में समाचार भी मिलते रहे हैं अनेक बंधुओं ने मुझे बड़ी पीड़ा के साथ बताया है कि महासभा की गतिविधियां चुनावों तक ही सीमित रह गई है। मुझे बताया गया कि चुनाव में विजय पाने के लिए समाज के बन्धु पांच–पांच, दस–दस लाख रूपये तक व्यय कर देते हैं। चुनावों में वोट डालने के लिए बसों में भर–भर कर समाज के बंधुओं को लेकर जाते हैं यह अत्यंत खेद और पीड़ादायक समाचार और स्थिति है। इसका एक ही अर्थ मेरे समझ में आता है कि समाज के बंधुओं से उन चुनाव लड़ने वाले व्यक्तियों का वोटर जैसा ही ताल्लुक है। समाज के बंधुओं जैसा नहीं। यह मानसिकता बड़ी विकृत है। निश्चय ही यह स्थिति महासभा के उद्देश्यों मनोभावों के प्रतिकूल आचरण की श्रेणी में रखी जा सकती है, ऐसे उन्मादी आचरण निश्चित रूप से महासभा की प्रासंगिकता पर काले धब्बे हैं। इस प्रकार के आचरण को प्रोत्साहित करना पल्लीवाल जैन समाज के प्रबुद्ध और युवा मानस पर विपरीत असर डालेगा और वे समाज से छिटक जाएगे। समाज को समग्र रूप से जोड़ना है तो ऐसी महत्वाकांक्षा और महत्वाकांक्षीओं का समाज के लोगों द्वारा कड़ा विरोध किया जाना चाहिए। चुनाव द्वारा पद पाने की लालसा महासभा के सामाजिक उद्देश्यों के साथ सामाजिक ताने–बाने पर भी विपरित असर डालेगी।

मुझे बताया गया कि चुनाव में विजय पाने के लिए समाज के बन्धु पांच–पांच, दस–दस लाख रूपये तक व्यय कर देते हैं। चुनावों में वोट डालने के लिए बसों में भर–भर कर समाज के बंधुओं को लेकर जाते हैं यह अत्यंत खेद और पीड़ादायक समाचार और स्थिति है। इसका एक ही अर्थ मेरे समझ में आता है कि समाज के बंधुओं से उन चुनाव लड़ने वाले व्यक्तियों का वोटर जैसा ही ताल्लुक है। समाज के बंधुओं जैसा नहीं।

मेरा सुझाव है कि ऐसी महत्वाकांक्षी चुनावी प्रक्रिया पर महासभा के वर्तमान नेतृत्व को गम्भीरता से विचार करना चाहिए और पूरे दम–खम के साथ पद पाने की इस होड़ पर प्रतिबंध लगाने जैसे कड़े कदम उठाने चाहिए। चुनावी प्रक्रिया में संशोधन के लिए यदि विधान में परिवर्तन करने की आवश्यकता पड़े तो यह भी किया जा सकता है, पर इस प्रकार के धन व शक्ति के व्यय और दिखावे पर रोक लगनी चाहिऐ। महासभा का पदाधिकारी बनने वाला धन खर्च करे या न करे पर वह समाज के बीच समय खर्च करने वाला अवश्य हो। शाखाओं को मजबूत किया जाना चाहिए उन्हें केन्द्रीय कार्यकारिणी द्वारा वर्ष भर के कार्यक्रम दिए जाने चाहिए ताकि वे इन दिशा निर्देशों पर अपनी शाखा के कार्यक्रमों द्वारा उस उस क्षेत्र के स्थानीय बन्धुओं से अधिक से अधिक जुड़ाव और सम्वाद कायम कर सके।

आपके विचार से महासभा के स्वरूप में किस प्रकार के बदलावों की आवश्यकता है कि वह समयानुकूल प्रासंगिक बनी रहे।

मैंने जैसा कि आपको पहले बताया था कि हमारे

समय में समाज में नौकरी के नाम पर पटवारी या मास्टर हुआ करते थे, गांव कस्बों में कुछ बंधु खेतीबाड़ी के साथ वहां छोटा–मोटा व्यापार करते थे आदमी के पास समय की कोई बहुत अधिक किल्लत नहीं थी अतः सुबह–शाम आपस में बैठकर घर–परिवार–नातेदार–रिश्तेदार–समाज आदि सभी विषयों पर सलाह–मसवरा, चर्चा हो जाती थी। साधन कम थे तो इच्छायें भी कम थी, आपसी संबंधों में प्रगाढ़ता थी। अब समय में बड़ी तेजी से बदलाव आया है और आने वाले समय में और भी बदलाव आयेगा। अब समाज में शिक्षा का बहुत तेजी से विकास हुआ है शिक्षा के कारण बड़े–बड़े अफसर है इंजीनियर है, डॉक्टर हैं, वकील है, जज है व प्रोफेसर हैं, कहने का मतलब है सब ओर विकास ही विकास है, गांव–कस्बे का व्यापारी, शहर में शोरूम का मालिक है, बड़े–बड़े कारखाने वाले हैं, समाज में दस–बीस करोड़ की बात छोड़ो सौ से हजार करोड़ तक के सफल बिजनेसमैन हैं समाज के लोगों ने चहुंओर विकास किया है।

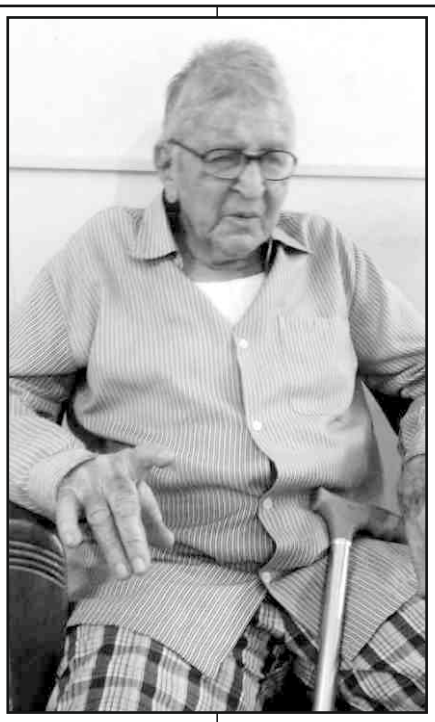

इस विकास की दौड़ ने सामाजिक मनोदशा को भी परिवर्तित किया है, और होना भी चाहिए, पहले भी धनी आदमी की अपनी एक गरिमा होती थी, एक भय होता था, एक अभिमान होता था, एक गरूर होता था तो आज यदि समयानुकूल प्रगति के कारण उपर उल्लेखित अवयवों में भी आशातीत वृद्धि हो तो कोई अनहोनी नहीं होगी। निश्चय ही इससे सामाजिक समरसता पर प्रतिकूल असर तो पड़ेंगे, दिखावा बढ़ेगा, होड़ बढेगी, अपने आप को श्रेणीकरण करने की प्रवृति में भी इजाफा होगा। अतः समाज का श्रेणीकरण तो होगा–सामाजिक ताने–बाने में भी इसके असर दिखाई देंगे– सामान्य जन का संख्या बल तो ज्यादा होने के बावजूद उनकी स्थिति हीन ही होगी अब आप ही सोचिए विचारिये कि सामाजिक समरसता में विकृति तो आयेगी ही। धनाढ्य वर्ग की स्वच्छंदता और दिखावे की प्रवृति बढ़ेगी तो सामान्य समाज जन में हीनभावनाओं का विकास होगा। यह एक मनावैज्ञानिक प्रतिद्वंद्वता जैसी अन्दर ही अन्दर समाज को खोखला करने जैसी परिस्थितियों का द्योतक है।

सामाजिक संगठन को समय के बदलाव के अनुरूप ही अपनी कार्ययोजना बनानी पड़ेगी। समाज में पनपने वाली विसंगतियों को मनोवैज्ञानिक तौर तरीकों से ही रोकने का प्रयास करना होगा। आजकल तो सम्वाद कायम करने के बहुत ही उम्दा साधन उपलब्ध है, उनका उपयोग सही दिशा में मनोभावों में परिवर्तन के लिये किया जा सकता है। श्री पल्लीवाल जैन पत्रिका भी अपनी सकारात्मक प्रभाव डालने के लिए एक उपयोगी साधन बन सकती है। पत्रिका के माध्मय से कुरितियों पर लगातार चोट करने की आवश्यकता है। मेरे देखने में आया है कि श्री पल्लीवाल जैन पत्रिका में कोई विशेष सामाजिक मुद्दे दिखाई नहीं पढ़ते विज्ञापनों की बाढ़ है या फिर समाचारों में नामों के प्रदर्शन पर ही जोर है। समाजिक मुद्दों और सामाजिक सरोकारों को लेख–आलेखों की बहुत कमी सी महसूस होती है इस पर ध्यान दिया जाना चाहिए। हम तो पुरानी पीढ़ी के लोग है अब लगभग नव्वें वें वर्ष में चल रहा हूं शरीर साथ देता नहीं है भूल भी जाता हूं कहने की हिम्मत भी खत्म होती जा रही है नये–नये लोग महासभा का नेतृत्व संभालेंगे वे निश्चय ही नये सोच और ऊर्जावान प्रक्रियाओं को जीवित करेंगे ऐसी मेरी मनोकामना है।

मैं अखिल भारतीय पल्लीवाल जैन महासभा के पचास वर्ष पूर्ण होने पर देश भर के सभी पल्लीवाल जैन भाईयो–माताओं–बहनों–नवयुवकों को बधाई देता हूं और यह अपेक्षा करता हूं कि वे महासभा को समग्र पल्लीवाल जैन समाज का प्रतिनिधि संगठन बनाए रखने में अपनी उर्जा और विवेक बुद्धी का पूरा उपयोग करेंगे।

पुनः महासभा की स्वर्ण जयंती की बहुत बहुत बधाई व शुभकामनाऐं।

धन्यवाद।

प्रथम पुण्यतिथि पर श्रृद्धांजलि

स्व. श्रीमती शारदा देवी जी जैन

(स्वर्गवास : 30.12.2019)

हम सभी परिवारजन आपके प्रेरणादायक चरित्र और
जीवन का स्मरण करते हुए श्रृद्धा पूर्वक
श्रृद्धांजलि अर्पित करते हैं।

श्रद्धावनत

राजेन्द्र कुमार जैन
(पति)

पुत्र-पुत्रवधु :
अतुल कुमार जैन-आभा जैन

पुत्री-दामाद :
अंजू जैन-अरविन्द जैन

पौत्री :
चार्वी जैन
जैसमिन

नवासे :
राहुल जैन
शुभव

निवास : 3/552, काला कुंआ, अलवर

रोशन हो हर जिंदगी

विधवाओं को रोजगार व आर्थिक सहयोग

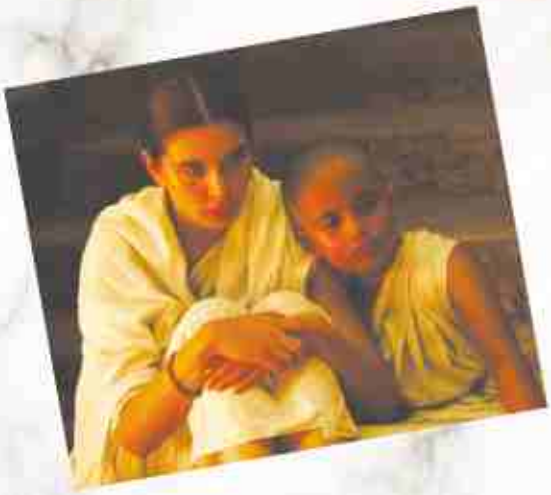

कुछ काल का प्रभाव व कुछ कर्मों का खेल समाज में अनेक महिलायें वैधव्य का दु:ख उठा रही है उनके लिये समाज में अत्यन्त करुणा का भाव है ऐसी महिलाओं को समाज में उचित सम्मान, रोजगार व आजीविका भत्ता आज की मंहगाई के काल में उचित मात्रा में दिया जा सके यह बिना आपके सहयोग के पूरा नही किया जा सकता सभी समाज के बन्धुओं से विनम्र अनुरोध है कि वे इस मद में महासभा को आर्थिक सहयोग प्रदान करें ताकि इस पुनीत कार्य को सुचारु रुप से संचालित किया जा सके।

धन के अभाव में कोई अशिक्षित न रहे

वात्सल्य विकास योजना

शिक्षा के प्रसार से समाज को सभी लक्ष्य प्राप्त हो सकते हैं। शिक्षा से ज्ञान और विवेक की प्राप्ति होती है। शिक्षित होने पर उद्यमता विकसित होगी। उद्यम से आय बढ़ेगी और देश और समाज आर्थिक रूप से सक्षम होगा। आर्थिक सक्षमता से एकता स्थापित होगी और तभी समाज शक्ति संपन्न बनेगा। वस्तुत: शिक्षा ऐसी नींव है, जिस पर ज्ञान, संस्कार और उद्यमिता का सुदृढ़ भवन खड़ा होता है। शिक्षा ही सर्वांगीण विकास का आधार है। इसी ध्येय को महासभा ने आदर्श रूप में रखा है। अत: समाज से विनम्र प्रार्थना है कि वात्सल्य विकास योजना में अपनी सामर्थ्य के अनुसार धन महासभा को दान दे ताकि बालकों के साथ बालिकाओं की शिक्षा पर उक्त धन का सद्पयोग कर गौरवशाली समाज के विकास के मार्ग को प्रशस्त किया जा सके।

विनम्र निवेदन : आप अपनी सहयोग राशि (चैक, ड्राफ्ट, नगद) केन्द्रीय कार्यकारिणी के किसी भी सदस्य के माध्यम से महासभा के पदाधिकारी- अध्यक्ष, महामंत्री, कोषाध्यक्ष तक पहुंचा सकते हैं।

धार्मिक सामंजस्य एवं सर्वधर्म समभाव

संसार में अनेक धर्म विद्यमान हैं– जैन, बौद्ध, सिक्ख, हिन्दू, इस्लाम, ईसाइयत आदि। सभी धर्मों के अपने रिवाज हैं। इन सभी धर्मों की अपनी परम्पराएं हैं। मूल धर्मों के अन्दर भी विभाजन देखने को मिलता है। जैसे हिन्दुओं में शैव व वैष्णव का, इस्लाम में शिया व सुन्नी का, ईसाइयत में कैथोलिक व प्रोटेस्टेंट का।

साधारणतया सभी धर्मावलम्बी अपने धर्म को श्रेष्ठतम धर्म मानते हैं तथा अन्य धर्मों को अपने धर्म से निम्न श्रेणी का मानते हैं। इससे कभी–कभी विभिन्न धर्मावलम्बियों के बीच संघर्ष की स्थिति हो जाती है। यदि किसी एक ही देश के अंदर विभिन्न धर्मावलम्बी रहते हों, तो यह स्थिति खतरनाक रूप धारण कर लेती है। इतिहास में धर्म के नाम पर ऐसा खूनी खेल हुआ है जिसकी मिसाल नहीं मिलती। यरूशलम पर अधिकार के लिए इस्लाम और ईसाइयत के धर्माबलम्बियों के बीच कई शताब्दियों तक संघर्ष हुआ। मध्य युग में कैथोलिक और प्रोटेस्टेटों के बीच संघर्ष हुआ। शिया और सुन्नी के बीच भी विभिन्न मतभेदों के कारण खुला संघर्ष होता रहा है। भारत में हिन्दु और मुसलमानों के बीच साम्प्रदायिक लडाई होती रही है।

विभिन्न धर्मावलम्बियों के घोर संघर्ष के बावजूद ऐसा कोई उदाहरण नहीं मिलता जहां जैन धर्मावलम्बियों ने धर्म के नाम पर संघर्ष किया हो। जैन धर्म एक ऐसा धर्म है जिसमें किसी भी प्रकार से धर्म के नाम पर हिंसा करना वर्जित है। अभी तक कोई ऐसा उदाहरण नहीं होता जहाँ जैन धर्मानुयायियों ने बल प्रयोग द्वारा जैन धर्म का प्रचार किया हो। ना ही ज्ञात इतिहास में ऐसा कोई दृष्टान्त मिलता है कि जैनों ने धार्मिक भिन्नता के कारण किसी दूसरे धर्म पर अत्याचार किया हो।

धार्मिक सामंजस्य और सर्वधर्मसमभाव का यह तात्पर्य बिल्कुल नहीं है कि व्यक्ति अपने धर्म को छोड़ दे या अपने धर्म के सिद्धान्तों के साथ समझौता कर ले या दूसरा धर्म अपना ले। इन सिद्धान्तों का तात्पर्य इतना मात्र है कि व्यक्ति जिस प्रकार अपनी धार्मिक आजादी चाहता है, जिस प्रकार वह स्वतंत्रतापूर्वक अपने धर्म का उत्थान चाहता है, जिस प्रकार अपनी धार्मिक मान्यताओं पर चोट को अस्वीकार करता है उसी प्रकार वह अन्य व्यक्तियों की धार्मिक आजादी, धार्मिक उत्थान और धार्मिक मान्यताओं का संरक्षण करे।

जैन धर्म की मौलिक मान्यताएं धार्मिक सामंजस्य और सर्वधर्म समभाव की महान पोषक हैं। जैन धर्म की धर्म संबंधी धारणा ही भिन्न है। दशवैकालिक सूत्र में कहा है– ''धर्म उत्कृष्ट मंगल है। उस धर्म का लक्षण है– अहिंसा, संयम और तप। जिसका मन सदा धर्म में लीन रहता है, उसे देव भी नमस्कार करते हैं।'' जिस धर्म में अहिंसा को ही धर्म माना गया है वह धर्म के नाम पर किस प्रकार अत्याचार और हिंसा कर सकता है अर्थात् नहीं कर सकता।

जैन धर्म के सिद्धांतों को अपनाकर ही धार्मिक सामंजस्य की स्थापना की जा सकती है और सर्वधर्म समभाव की भावना को बनाया रखे जा सकता है। धर्म की अवधारणा, अनेकांत और अहिंसा जैन धर्म के आधार हैं। इनका पालन करने पर किसी भी दूसरे धर्म के प्रति दुर्भावना व घृणा की भावना नहीं रहेगी। समस्त धार्मिक संघर्ष का वहीं अंत हो जाएगा।

गृहस्थावस्था में रहने वालों के लिए जैन धर्म में धर्म के लिए संघर्ष करना धर्म नहीं बताया वरन् कहा है– ''जो प्राणियों को संसार के दुःख से उठाकर उत्तम सुख को धारण करे उसे धर्म कहते हैं''। संघर्ष जो दुःख देता है उसका तो त्याग करना ही होगा। किसी की रोटी छीनना धर्म नहीं है वरन् ''आहारदान आदि ही गृहस्थों का परम धर्म है।'' कार्तिकेय अनुप्रेक्षा में कहा है– जीवों की रक्षा करने को धर्म कहते हैं। जहां दूसरों को सुख पहुंचाना धर्म माना गया, जहां जीवों की रक्षा करना धर्म माना है, जहां भोजन कराना धर्म माना है वहां दूसरों की जान कैसे ली जा सकती है? वहां दूसरों को केवल इसलिए नहीं मारा जा सकता कि उनका धर्म दूसरा है। वहां दूसरों को केवल इसलिए नहीं मारा जा सकता कि

वे उस धर्म का पालन नहीं कर रहे हैं जिसका मैं पालन कर रहा हूँ।

जैन धर्म दस धर्म भेद बताए हैं– उत्तम क्षमा, मार्दव, आर्जव, सत्य, संयम, शौच, तप, त्याग, आकिंचन्य और ब्रह्मचर्य। जहां क्षमा है वहाँ क्रोध नहीं हो सकता। जहां मार्दवता और आर्जवता है वहाँ दूसरों को दुःख पहुंचाने का भाव नहीं हो सकता। जहां सत्य और संयम है वहाँ दूसरों को भी अपने समान समझने की प्रवृत्ति होती है। तपस्वी और त्यागी के लिए कोई पराया नहीं होता। जिस धर्म में धर्म के ये अर्थ लगाए जाते हों वहीं सभी धर्मों के साथ समान भावना से रहा जा सकता है, वहीं धर्मों के बीच सामंजस्य स्थापित हो सकता है।

जैन धर्म का सार ही अहिंसा है। अहिंसा को सब धर्मों में श्रेष्ठ मानकर कहा है– ''अहिंसा सब धर्मों में श्रेष्ठ है। ऋषियों ने प्रायः उसकी महिमा के गीत गाये हैं। सच्चाई की श्रेणी उसके पश्चात् है।'' अहिंसा भी जैन धर्म में अति सूक्ष्म रूप से मापी गई है। मारने की बात तो दूर ऐसा सोचने मात्र से ही हिंसा हो जाती है। बाह्य परिणामों का मरण हो या न हो, लेकिन यदि मन में हिंसा का संकल्प हो तो वह हिंसा है। जैन धर्म द्वारा ही साम्प्रदायिक हिंसा का जबाव दिया जा सकता है। जहां जीव को मारने का विचार लाना भी हिंसा माना गया है। जैन धर्म में मनुष्य तो क्या छोटे–छोटे एकेन्द्रिय, द्विन्द्रिय जीवों तक को बचाने का प्रयास किया है– ''मन–वचन काय से एकेन्द्रिय से लेकर पंचेन्द्रिय जीव तक का घात नहीं करना चाहिए''। इस प्रकार जैन धर्म के अहिंसक सिद्धान्त का पालन करके ही धर्म के नाम होने वाली हिंसा को रोका जा सकता है। यदि जैन धर्म में बताए धर्म को जीवन में स्थान दिया जाए तो मानवता के लिए यह अत्यंत शुभ कदम होगा।

साम्प्रदायिक घृणा और हिंसा को मिटाने मे अनेकांतवाद भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। विभिन्न सम्प्रदायों की अलग–अलग आचार संहिता है, उनके बाहरी रीति–रिवाजों में भी भिन्नता होती है। इस भिन्नता के कारण विभिन्न सम्प्रदायों में आपसी संघर्ष भी हो जाता है क्योंकि दूसरे सम्प्रदाय के भिन्न आचरणों और क्रियाकलापों को देखकर वे उनकी बुराई करते हैं, उन्हें उचित नहीं मानते। इस समस्या के समाधान के लिए अनेकांत का विचार अत्यंत महत्वपूर्ण है।

अनेकांतवाद विभिन्न मतों, वादों और विचारों के मध्य समन्वय का कार्य करता है। अनेकांतवाद के अनुसार कोई भी विचार या मत एक दृष्टि विशेष से सत्य है। वह मत या विचार अन्य दृष्टि विशेष से असत्य भी हो सकता है। निरपेक्ष रूप से कोई भी विचार सत्य नहीं है। राजवार्तिक में इसे प्रश्नोत्तर के माध्यम से समझाया है– ''प्र.– जो नष्ट होता है वही नष्ट नहीं होता और जो उत्पन्न होता है वही उत्पन्न नहीं होता? यह बात परस्पर विरोधी मालूम होती है? उत्तर– वस्तुतः विरोधी नहीं है, क्योंकि जिस दृष्टि से नित्य कहते हैं यदि उसी दृष्टि से अनित्य कहते तो विरोध होता जैसे कि एक जनकत्व की ही अपेक्षा किसी को पिता और पुत्र कहने में। दो नयों की दृष्टि से दो धर्म बन जाते हैं।'' साम्प्रदायिकता का भी यही प्रत्युत्तर दिया जा सकता है जिसमें एक खास धर्म को ही सत्य माना जाता है। वह धर्म और उसके कर्मकाण्ड उसके अनुयायियों की दृष्टि से उचित हो सकते हैं परन्तु अन्य धर्मावलम्बियों की दृष्टि में भी उचित हो यह आवश्यक नहीं। सभी धर्म के अनुयायी इस विचार का अनुसरण करें कि कोई भी धर्म पूर्ण नहीं है। सभी धर्मों में सत्यांश है तो साम्प्रदायिकता जैसी समस्या को जड़ से मिटाया जा सकता है। एकांतवादी मत को नहीं माना जा सकता। ''आपकी अनेकांत दृष्टि सच्ची है। विपरीत इसके जो एकांत मत है वह शून्यरूप असत् है, अतः जो कथन अनेकांत दृष्टि से रहित है, वह सब मिथ्या है।''

जैन धर्म में पर्युषण पर्व की अवधारणा है। पर्युषण पर्व में प्रत्येक व्यक्ति अपनी अन्तरात्मा से दूसरे व्यक्ति के प्रति किए गए दुर्व्यवहार के लिए क्षमा याचना मांगता है। इस अवधारणा का यह महत्व है कि व्यक्ति दूसरों के प्रति क्षमाशील बने तथा अपनी गलतियों को स्वीकारें। 'क्षमा' का जहां भाव है वहां घृणा और हिंसा के विचार नहीं टिक सकते।

जैन धर्म की ''जीओ और जीने दो'' की संस्कृति के द्वारा विभिन्न धर्मों के बीच सामंजस्य बैठाया जा सकता है तथा सर्वधर्म समभाव की स्थापना की जा सकती है। ना केवल हमारा धर्म फले–फूले वरन् अन्य सम्प्रदाय भी विकास करें। मानवता का सच्चा विकास सभी सम्प्रदायों के विकास में है।

–डॉ. धीरज जैन
'वर्तमान में वर्धमान' से साभार

कल्याण व करूणा में परिग्रहों की व्यापारिकता का बढ़ना

करुणा शब्द से आन्तरिक प्रेम व दया की दृष्टि में एक दूसरे की आवश्यकताओं को समझते हुए अपनी अपनी सार्म्थ्यनुसार मदद करने के भाव बनते हैं।

कल्याण में सिर्फआत्मिक कल्याण की ही बातें होती है इसमें कल्याण की चाह रखने वाले की ही प्रमुख भूमिका स्वयं हेतु स्वयं ही करने की होती है।

यह स्वयं की ही भूमिका में ज्ञान–अर्जन के लिए दूसरे महानुभावों के सद् उपदेशों, ग्रंथों व धार्मिक विषयों से सम्बंधित पुस्तकों आदि से कुछ न कुछ ज्ञान ग्रहण करने के लिए स्वयं प्रयासरत् रहता है तथा कभी कभी अन्य महानुभावों के साथ गुरू व शिष्य का संबंध स्थापित करके गुरु का अनुसरण व गुरू आज्ञा को अपने कल्याण की प्राप्ती हेतु शिरोधार्य करता है। इसमें गुरु व शिष्य के मध्य कम से कम परिग्रह दिखाई देते हैं किन्तु करूणा में परिग्रहों की उपस्थिति, अधिक से अधिक द्रव्यों की देखने को मिलती है। इन परिग्रहों को दो वर्गो में विभक्त किया जा सकता है। जैसे धन रूपी द्रव्य तथा अन्य सुविधा या साधन सम्बंधी आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु अन्य पदार्थों की उपस्थिति अधिक रूप से या बाहुल्यता में पाई जाती है।

यद्यपि दोनों विषयों में सिर्फएक ही समानता दिखाई देती है कि दोनों की भावनाओं का उदय स्वयं उनके हृदय से उगता है या निकलता है तथा वचनों व कार्य ये आचरण करके ध्येय की प्राप्ति की जाती है किन्तु अन्तर दोनों विषयों में बहुत है।

करूणा सदैव साधनों व पदार्थों के अभाव की स्थिति से निपटने के लिए की जाती है किन्तु कल्याण में पूर्णता व परिपक्व ज्ञान के अभाव की रिक्तता को दूर करने के लिए केवल गुरू रूपी व्यक्ति का ही स्थिर सान्निध्य प्राप्त किया जाता है, हर एक व्यक्ति विशेष का नहीं। करूणा सामाजिक विषय से संबंधित है जिसके साथ अपरम्पार परिग्रहों के स्रोत मौजूद रहते है तथा परिग्रहों की अधिकता आ जाने पर अभिमान, ईर्ष्या, वैमन्यस आदि अवगुणों का आ जानना स्वाभाविक है किन्तु कल्याण का आध्यात्मिकता से सम्बंध होने के कारण न्यूनतम व अति आवश्यक परिग्रहों की ही उपस्थिति होती है। तुलनात्मक दृष्टि से करूणा के साथ अव्यवहारिक, द्वेषपूर्ण, मान–सम्मान, अभिमानी आदि प्रवृत्तियों के आ जाने को नकारा नहीं जा सकता है। किन्तु कल्याण में दोनों, गुरू व शिष्य की समदृष्टि व समध्येय प्राप्त करने के लक्ष्य के कारण किसी भी प्रकार की कटुता, प्रतिद्वन्द्विता व राग आदि का जन्म नहीं होता है। अपरम्पार परिग्रहों में धन, सम्पदा, आश्रम, मठ, देवालय व नान प्रकार की अन्य बहुमूल्य सम्पतियों के प्रशासन अथवा स्वामित्व पर लड़ाई–झगड़े का होना बहुत ही स्वाभाविक है जैसा अन्य धर्मों व सम्प्रदायों में दिखाई दे रहा है अतः कल्याणकारी संस्थाओं जैसे पहले छोटे स्तर अर्थात् गांव या शहरों में अलग–अलग उपलब्ध हुआ करती थी कि असहाय या विधवा आश्रम, अनाथालय, आरोग्यशाला, व शिक्षा हेतु गुरूकुल आदि की व्यवस्था ही अपने छोटे स्वरूप के कारण अवगुणों से दूर सामाजिक सेवा देने के लिए इस सामाजिक परिवेश में उपयुक्त हो सकती है, बड़े स्तर पर यद्यपि यह कार्य हो रहा है किन्तु कुछ सच्चे निस्वार्थी व सेवा करने वालों की कमी व पारदर्शिता की भी कमी देखने को मिल रही है और अच्छे व सुखद परिणामों की गति भी मांग की अपेक्षा से कम है। राजस्थान के जयपुर क्षेत्र में नाना प्रकार की गतिविधियों के कारण व सुविधाऐं उपलब्ध कराने के लिए वहां का बौद्धिक वर्ग बधाई के पात्र हैं। हमको भविष्य हेतु अपने वर्तमान स्वरूप व सम्पत्तियों की रक्षा हेतु समस्त सम्पतियों का पंजीकरण अल्पसंख्यक एक्ट के अधीन अवश्यक करवाना चाहिए तथा हर स्तर पर चाहे गांव, शहर, जिला, राज्य आदि के अनुसार कमेटियों का गठन करके केन्द्रीय स्तर पर कोई सेवानिवृत्त उच्च पदधारी या कोई प्रतिमा धारी या इच्छुक अनुभवी या धनाढय या प्रभावशाली आदि गुणवाले व्यक्तियों के तीन व्यक्तियों या अधिक को संगठित रूप से प्रभावी बनाना चाहिए तथा मूल संविधान को बना कर अधिक से अधिक अनुभवी, न्यायविक योग्यता वाले व्यक्तियों को मूल्यांकन या सुधार हेतु आवश्यक रूप से पत्रिका व समाचार पत्रों के माध्यम से सूचित करना चाहिए ताकि अति उत्तम संविधान की रचना हो सके तथा अच्छी सुदृढ़, व्यावहारिक विचार धारा वाली बातों का समादेश हो सके और भविष्य में किसी भी प्रकार की अड़चन, दुविधा या नकारात्मक दृष्टि का जन्म नहीं हो सकते की संभावना की जा सके।

वर्तमान में चल रहे धार्मिक संस्कृति को बचाने, बढ़ाने व फैलाने वाले स्कूल जो सांगानेर, मथुरा, इन्दौर, जयपुर आदि अनेकों स्थानों में चल रहे है, निस्संदेह एक अच्छा कदम हैं अब इनके साथ यदि कुटीर उद्योग धन्धों, हस्तकला उद्योगों, व्यवसायिक शिक्षित जैसे चार्टर्ड एकाउंटेटस, डॉक्टरस, नर्सेज, एडवोकेटस, टैक्नीकल, मैनेजैरियल, साफ्टवेयर आदि के अध्ययन हेतु उच्च गुणवत्ता वाले जैन कालेज, विद्यालय, स्पोर्टस विद्यालय आदि यदि सामाजिक स्तर पर खुल सकते हैं तो निस्संदेह यह समाज के उत्थान व संगठित होने में मील का पत्थर अवश्य साबित होंगे।

–मुनिन्द्र कुमार जैन
2/62, राधापुरम् एस्टेट, स्टेडियम रोड बाईपास, मथुरा

स्वास्थ्य एवं जैन दर्शन

जैन दर्शन के अनुसार जीव या आत्मा जब स्वभाव में रहता है वह स्वस्थ्य कहलाता है। स्व में उपस्थित होने का अभिप्राय है वह रागद्वेष आदि विकारों से रहित होकर आत्म विकारी पर नियंत्रण रखता है तथा विकारों के भावों में जीने वाली भावनाओं के कारण अस्वस्थ्य होने से बच जाता है। क्रोध मान माया लोभ आदि कषायों का प्रभाव मन और शरीर पर पड़ता है क्योंकि जैन दर्शन में इन कषायों व औदयिक भावों की गणना कृष्ण, नील आदि षढ़् लेश्यों में मानी गई है इनका प्रभाव सम्पूर्ण चेतना पर पड़ता है। जिससे व्यक्ति आत्मा, मन एवं शरीर तीनों स्तर पर स्वयं को उर्जा एवं वीर्यवान अनुभव करता है। उसमें बल एवं सामर्थ्य का प्रवाह निरन्तर सक्रिय रहता है वह आलस्य और प्रमाद को दूर रखता है उत्साह और प्रसन्नता से लबालब रहता है।

जैन आगम स्वास्थ्य का सूत्र का उल्लेख है, ओध निर्युक्ति में कहा गया है–

'हियाहारा अव्याहारा य जे नरा।
न ते विज्जा ति गिच्छंति, अप्पाणं ते तिगिच्छ'

अर्थात् जो मनुष्य शरीर के लिए हितकार, सीमित एवं अल्पआहार ग्रहण करते हैं, उन्हें वैद्यों से चिकित्सा कराने की आवश्यकता नहीं वे स्वयं ही अपने चिकित्सक होते हैं। शरीर के आवश्यकता के अनुरूप अविरुद्ध आहार हिताहार करते हैं तथा यथा समय अनराम तय अनोदरी तय रस परित्याग तय करते हैं।

जैन दर्शन में रत्नत्रय को मोक्ष मार्ग कहा गया है। यही विधि साधना स्वास्थ्य भी प्रदान करती है।

सम्यग्दृष्टि व्यक्ति आत्मिक मानसिक एवं शारीरिक स्तर पर स्वस्थ्य होने में अपना हित समझता है। वह सम्यग्ज्ञान के काण यह जानता है कि भोग रोग का कारण है तथा योग स्वास्थ्य प्रदान करता है। वह सम्यग्दृष्टि व्यक्ति आत्मिक स्तर पर कषाय यानि क्रोध, माया, लोभ, ईर्ष्या, राग द्वेष आदि विकारों को अहितकर मानकर इनके त्याग में अपना हित मानता है। सम्यक् चरित्र होने के कारण इन विकारों का परिहार करता है तथा वह आत्मिक, मानसिक एवं शारीरिक स्तर पर स्वस्थ्य रहता है।

जैन दर्शन की दृष्टि एवं सोच को स्वास्थ्य के लिए हितकारी मानकर तीनों पर रोगों का समाधान तथा रोग उल्पचयन हो इसका प्रबंध करता है इसके लिए जैन दर्शन में जैन जीवन शैली एवं तपश्चरण का प्रावधान है। आत्मिक उन्नयन के साथ तनमन को भी स्वस्थ्य बनाता है।

–सुमति चंद जैन
खोह (अलवर)

सुकून और आराम

बात बहुत पुरानी है। एक बार विश्व विजय पर निकला सिकन्दर यूनान से भारत तक आ पहुंचा था। वह एक जंगल से आगे बढ़ रहा था। तभी एक साधु शिला पर लेटे हुए मिले। सिकंदर को देखकर भी वह ज्यों के त्यों लेटे रहे। सिकन्दर ने गुस्से में कहा, 'आपको मालूम है कि आपके सामने विश्व विजेता खड़ा है?'

साधु ने तब निश्चित होकर कहा, 'तुम खून खराबा क्यों करते हो?'

सिकंदर ने कहा, 'इससे मैं पूरी दुनिया को जीत लूंगा और उस पर राज करूंगा।'

साधु ने फिर कहा, 'फिर'?

सिकंदर बोला, 'मेरे पास महल, गहने, संपत्ति, नौकर–चाकर और विराट सत्ता और विशाल साम्राज्य होगा।'

साधु बोले, 'फिर?'

सिकंदर बोला, 'ये करने के बाद मैं सुकून के साथ रहूंगा।'

साधु बोले, 'तुम इतना सब करने के बाद आराम से रहोगे। मैं तो वैसे ही आराम से रह रहा हूँ।' साधु ने लेटे–लेटे ही उत्तर दिया और दूसरी करवट लेकर सो गया।

तब सिकन्दर को पहली बार यह अहसास हुआ कि वह एक मूर्खतापूर्ण अभियान पर निकला है। कहा जाता है कि उस दिन के बाद से उसने अपना अभियान खत्म कर दिया। वह समझ चुका था कि सुकून और आराम पाने का उसका रास्ता उचित नहीं था।

स्वाध्याय का जीवन में महत्व

जीवन एक मरुस्थल जैसा, कर्मताप भरपूर है।
शांति नहीं मन में किंचित, भेदज्ञान से दूर है।।
ऊंचा कुल पाकर भी करता, नीच पाप मय कर्म है।
धन–दौलत, माया को पाकर मानव भूला धर्म है।।

'स्वाध्याय' का शाब्दिक अर्थ स्व यानि स्वयं .अध्ययन करना है। श्री जिनेन्द्र देव के द्वारा कहे गये, गणधरों द्वारा समझाये गये और आचार्यो द्वारा लिखे गये सद्शास्त्रों का पढ़न–पढ़ाना, सुनना–सुनाना, पूछना–बताना, चिंवतन–मनन करना स्वाध्याय कहलाता है। स्वाध्याय ज्ञानोपार्जन का एक सुगम साधन है। अतः मंदिर जी में थोड़ी अवधि के लिये बैठकर विनयपूर्वक शास्त्रों को पढ़ना चाहिये।

स्वाध्याय करने से ज्ञान में वृद्धि होती है तथा जिनेन्द्र देव में प्रीति और श्रृद्धा बढ़ती है। अतः आत्मा के हित के लिये जिनवाणी का अध्ययन आवश्यक है।

मानव जीवन में वचा त्यागने योग्य है और क्या ग्रहण करने योग्य है इस पर विचार करके हमें अपना आचरण करना चाहियें हमें पाप–क्रियाओं से बचना और पुण्य क्रियाओं को करना चाहिये। नित्य कर्मों से निवृत होकर, हमें देव–दर्शन पूजन, स्वाध्याय, सामायिक आदि प्रतिदिन करना चाहिये। इससे हमारे परिणामों में निर्मलता आती है। प्रतिदिन घन्टे–आधा घन्टे शास्त्रों का स्वाध्याय भी आवश्यक है। स्वाध्याय के बराबर कोई तप नहीं है। शास्त्र–स्वाध्याय से ही हमारा ज्ञान बढ़ सकेगा। और हम अपनी आत्मा से साक्षात्मकर कर सकते है।। जिस प्रकार दही को मथने से ही मक्खन प्राप्त होता है उसी प्रकार स्वाध्याय से हमें अपनी आत्मा से साक्षात्कार हो सकता है। ज्ञान बढ़ने के साथ यह भी जरूरी है कि उस ज्ञान को चरित्र में उतारने का प्रयास करें। ज्ञान दिखाने की वस्तु नहीं है जीवन में उतारने की वस्तु है। यदि हमने उसे चरित्र में नहीं उतारा तो वह ज्ञान किसी उपयोग का नहीं है।

यह भी विचारणीय है बिन्दु है कि हम अपने शरीर की सफाई तेल–साबुन से प्रतिदिन करते हैं, मगर आत्मा की सफाई की ओर कभी ध्यान नहीं देते हैं अतः आवश्यकता इस बात की है कि हम गुरूओं द्वारा दिखाये मार्ग पर चलकर अपनी आत्मा की रक्षा यानि कल्याण करें। पूर्व में किये गये सत्कर्मो की वजह से मनुष्य पर्याय मिली है। मनुष्य पर्याय मिलना दुर्लभ है। यदि यह पर्याय मिल भी गयी तो उंच कुल यानि जैन धर्म भी मिल गया सच्चे देव शास्त्र गुरू भी प्राप्त होना और भी दुर्लभ है। हम परम भाग्यशाली जीव है जिन्हें मनुष्य पर्याय और जैन धर्म प्राप्त हुआ है।

अतः जैन धर्म के बारे में ज्ञान बढ़ाने हेतु स्वयं का प्रयास किया जाना आवश्यक है। इस संदर्भ में विभिन्न ग्रंथों व विद्धानों की पुस्तकों को पढ़ने व मुनि व विद्वानों के प्रवचन को सुनने व पढ़ने से उनके संक्षिप्त नोट्स तैयार करना भी एक स्वाध्याय है। जैन धर्म से सम्बंधित विभिन्न विषयों और उनके प्रयुक्त शब्दावली का यदि प्रारंभिक ज्ञान हो तो स्वाध्याय में आशातीन लाभ होता है और ग्रहस्थ की रुचि बनी रहती है। स्वाध्याय में रुचि रखने पर अपनी आत्मा का कल्याण हो सकता है। शास्त्रों में कहा गय है कि ''न धर्मों धार्मिक बिना'' अर्थात् धार्मिक के बिना धर्म का अस्तित्व नहीं है। धार्मिक वे नहीं है जो नाम से केवल जैन हैं अपितु वे हैं जो कर्म से जैन है। आज चारों ओर अनैतिकता, मांस–अंडा भक्षण, महायान, हिंसा, झूठ, चोरी, भ्रष्टाचार आदि पाप–क्रियाओं का बोलबाला है। अतः सच्चा सुख प्राप्त करने हेतु यह आवश्यक है कि हम जैन–धर्म के स्वरूप को भली–भांति समझ और यथाशक्ति इस पर आचरण भी करें। यह सब स्वाध्याय से भी संभव है।

आज के इस भौतिक युग की चकाचौंध में अधिकांश व्यक्ति अपने धर्म–कर्म को भूल गये से लगते हैं और धर्मानुसार आचरण अत्याधिक कठिन लगता है फिर भी इस ओर हम कुछ प्रयास तो कर ही सकते हैं। अंत में जिनेन्द्र देव से यही मंगलकामना है कि वह हम सबको ऐसी आत्मिक शक्ति प्रदान करे कि हम सच्चे धर्म का यथार्थ स्वरूप समझ सके और स्व–कल्याण के माग पर अग्रसर हो कर अपनी इस मानव पर्याय का न्यूनाधिक मात्रा में सार्थक कर सके। यह केवल स्वाध्याय द्वारा ही संभव है। यही महत्व है जीवन में स्वाध्याय का।

–श्रीमती संतोष जैन
102/117 'जय पारस', मीरा मार्ग
मानसरोवर, जयपुर

बँटवारा

घर में रोज क्लेश रहने लगा तो दोनों भाईयों ने अलग हो जाने का फैसला कर लिया। बँटवारे के समय छोटे–बड़े दोनों ने घर की छोटी से छोटी चीज पर भी अपना अधिकार जताने के लिए तरह–तरह की दलीलें दीं। सुई से लेकर फ्रिज तक को हथियाने के लिए डटकर संघर्ष हुआ। किसी वस्तु के साथ किसी का बचपन का मोह जुड़ा था तो कोई शौक से खरीदी गई थी। कोई पत्नी के मायके से आई थी तो कोई छोटा–बड़ा होने के नाते उनकी थी।

जैसे–तैसे बाकी तो सब बँट गया, बस वृद्ध माता–पिता रह गए। उन पर किसी ने अपना अधिकार नहीं जताया। किसी ने नहीं कहा कि उनसे उसका जन्म का रिश्ता है। बूढ़ों का बोझ उठाने को कोई तैयार न था। बड़े ने सुझाव दिया– 'ऐसा कर, साल के पहले छह महीने इन्हें तू रख लेना, बाद के छह महीने मैं रख लूगाँ।'

छोटे की पत्नी ने तुरंत पति के कान में फूंक मारी– 'छह महीने में तो हम माता जी की बीमारी के इलाज में ही कंगाल हो जाएँगे और पता नहीं बुढ़िया छह महीने काटेगी भी या नहीं। कहीं चल बसी तो हजारों और लगेंगे। इन्हें कहो, पहले छह महीने ये ही रख लें।'

बात बनी नहीं तो छोटे ने सुझाव दिया– 'क्यों न इन्हें हम आपस में बाँट लें।'

बड़ा सहमत हो गया। पर सवाल पैदा हुआ कि बीमार माँ को कौन ले? माँ तो खर्च का घर है। पिता जी की तो थोड़ी पेंशन भी आती है।

आखिर 'लॉटरी' द्वारा माँ–बाप को बाँटने पर सहमति हो गई। कागज के एक–जैसे दो टुकड़े लिए गए। एक पर 'माँ' तथा दूसरे पर 'पिता' लिखा गया। दोनों टुकड़ों को तह करके मेज पर रखा गया तथा एक बच्चे को पर्ची उठाने को कहा गया।

जब बच्चा पर्ची उठा रहा था तो दोनों भाई तथा उनकी पत्नियाँ आँखें मूंदकर भगवान से प्रार्थना कर रहे थे– 'हे भगवान, हमारी पिता वाली पर्ची ही निकालना।'

–रविन्द्र कुमार जैन

चौरसियावास रोड, द्वारका नगर,
गली नं 2, अजमेर

माँ–बाप को भूलना नहीं

भूलो सभी को मगर, माँ–बाप को भूलना नहीं।
उपकार अगणित हैं उनके, इस बात को भूलना नहीं।।

पत्थर पूजे कई तुम्हारे, जन्म के खातिर अरे।
पत्थर बन माँ–बाप का, दिल कभी कुचलना नहीं।।

मुख का निवाला दे अरे, जिनने तुम्हें बडा किया।
अमृत पिलाया तुमको, जहर उनके लिए उगलना नहीं।।

कितने लड़ाए लाड़ सब, अरमान भी पूरे किए।
पूरे करो अरमान उनके, बात यह भूलना नहीं।।

लाखों कमाते हो भले, माँ–बाप से ज्यादा नहीं।
सेवा बिना सब राख है, मद में कभी फूलना नहीं।।

सन्तान से सेवा चाहो, सन्तान बन सेवा करो।
जैसी करनी वैसी भरनी, न्याय यह भूलना नहीं।।

जिसने बिछाए फूल थे, हर दम तुम्हारी राहों में।
उस राहबर के राह के, कंटक कभी बनना नहीं।।

धन तो मिल जायेगा मगर, माँ–बाप क्या मिल पाएँगे।
पल–पल पावन उन चरण को, चाह कभी भूलना नहीं।।

****

वैराग्य

भगवान महावीर वैराग्य विषय पर व्याख्यान दे रहे थे। प्रवचन सुन रहे एक गृहस्थ के मन में प्रश्न उभरा और उसने पूछा –प्रभु क्या कोई ऐसा मार्ग नहीं है, जिसमें संसार छोड़ना भी न पड़े और मैं भगवान को भी पा लूं। भगवान मुस्कराए और बोले – वैराग्य बाहर के संसार से भागने का नाम नहीं, भीतर के संसार को त्यागने का नाम है। संसार में रहते हुए सद्भावनाओं के साथ सुकर्म करो और अर्जित पुण्य, परमात्मा के समझ कर उन्हीं के अंशों में वितरित कर दो। अनासक्त कर्म, बंधनों से मुक्ति और प्रभु प्राप्ति का साधन बनता है।

–दयाचन्द जैन

310, कावेरी ग्रीन्स, आगरा

विवाह की बढ़ती उम्र पर खामोशी क्यों...?

कुंवारे बैठे लड़के–लड़कियों की एक गंभीर समस्या आज सामान्य रुप से सभी समाजों में उभर के सामने आ रही है। इसमें उम्र तो एक कारण है ही मगर समस्या अब इससे भी कहीं आगे बढ़ गई है, क्योंकि 30 से 35 साल तक की लड़कियां भी कुंवारी बैठी हुई हैं। इससे स्पष्ट है कि इस समस्या का उम्र ही एकमात्र कारण नहीं बचा है। ऐसे में लड़के लड़कियों के जवां होते सपनों पर न तो किसी समाज के कर्ता–धर्ताओं की नजर है और न ही किसी रिश्तेदार और सगे संबंधियों की। हमारी सोच कि हमें क्या मतलब है, में उलझ कर रह गई है। बेशक यह सच किसी को कड़वा लग सकता है लेकिन हर समाज की हकीकत यही है, 25 वर्ष के बाद लड़कियां ससुराल के माहौल में ढल नहीं पाती है, क्योंकि उनकी आदतें पक्की और मजबूत हो जाती हैं अब उन्हें मोड़ा या झुकाया नहीं जा सकता जिस कारण घर में बहस, वाद विवाद, तलाक होता हैं बच्चे सिजेरियन ऑपरेशन से होते हैं जिस कारण बाद में बहुत सी बिमारी का सामना करना पड़ता है।

शादी के लिए लड़की की उम्र 18 साल व लड़के की उम्र 21 साल होनी चाहिए ये तो अब बस आंकड़ों में ही रह गया है। एक समय था जब संयुक्त परिवार के चलते सभी परिजन अपने ही किसी रिश्तेदार व परिचितों से शादी संबंध बालिग होते ही करा देते थे। मगर बढ़ते एकल परिवारों ने इस परेशानी को और गंभीर बना दिया है। अब तो स्थिति ऐसी हो गई है कि एकल परिवार प्रथा ने आपसी प्रेम व्यवहार ही खत्म सा कर दिया है। अब तो शादी के लिए जांच पड़ताल में और कोई तो नेगेटिव करें या न करें पर अपने ही खास सगे संबंधी उसे नेगेटिव कर, बनते संबंध खराब कर देते है।

उच्च शिक्षा और हाई जॉब – बढ़ा रही उम्र

यूं तो शिक्षा शुरू से ही मूल आवश्यकता रही है लेकिन पिछले डेढ़ दो दशक से इसका स्थान उच्च शिक्षा या कहें कि कमाने वाली डिग्री ने ले लिया है। इसकी पूर्ति के लिए अमूमन लड़के की उम्र 23–24 या अधिक हो जाती है। इसके दो–तीन साल तक जॉब करते रहने या बिजनेस करते रहने पर उसके संबंध की बात आती है। जाहिर से इतना होते–होते लड़के की उम्र तकरीबन 30 के इर्द –गिर्द हो जाती है। इतने तक रिश्ता हो गया तो ठीक, नहीं तो लोगों की नजर तक बदल जाती है। यानि 50 सवाल खड़े हो जाते हैं।

चिंता देता है – उम्र का यह पड़ाव

प्रकृति के हिसाब से 30 प्लस का पड़ाव चिंता देने वाला है। न केवल लड़के–लड़की को बल्कि उसके माता–पिता, भाई–बहन, घर–परिवार और सगे संबंधियों को भी। सभी तरफ से प्रयास भी किए, बात भी जंच गई लेकिन हर संभव कोशिश के बाद भी रिश्ता न बैठने पर उनकी चिंता और बढ़ जाती है। इतना ही नहीं, शंका–समाधान के लिए मंदिरों तक गए, पूजा–पाठ भी कराए, नामी विशेषज्ञों ने जो बताए वे तमाम उपाय भी कर लिए पर बात नहीं बनती। मेट्रीमोनी वेबसाइट्स व वाट्सअप पर चलते बायोडेटा की गणित इसमें कारगार होते नहीं दिखाई देते। बिना किसी मीडिएटर के संबंध होना मुश्किल ही होता है – मगर कोई मीडिएटर बनना चाहता ही नहीं है। मगर इन्हें कौन समझाए की जब हम किसी के मीडिएटर नहीं बनेंगे तो हमारा भी कोई नहीं बनेगा। एक समस्या ये भी हम पैदा करते जा रहे है कि हम सामाजिक न होकर एकांतवादी बनते जा रहे है।

आखिर कहां जाए युवा मन

अपने मन को समझाते–बुझाते युवा आखिर कब तक भाग्य भरोसे रहेगा। अपनों से तिरस्कृत और मन से परेशान युवा सब कुछ होते हुए भी अपने को ठगा सा महसूस करता है। हद तो तब हो जाती है जब किसी समारोह में सब मिलते हैं और एक दूसरे से घुल मिलकर बात करते हैं लेकिन उस वक्त उस युवा पर क्या बीतती है, यह वही जानता है। ऐसे में कई बार नहीं चाहते हुए भी वह उधर कदम बढ़ाने को मजबूर हो जाता है जहां शायद कोई सभ्य पुरूष जाने की भी नहीं सोचता या फिर ऐसी संगत में बैठता है जो बदनाम ही करती हो।

ख्वाहिशें अपार, अरमान हजार

हर लड़की और उसके पिता की ख्वाहिश से आप और हम अच्छी तरह परिचित हैं। पुत्री के बनने वाले जीवनसाथी का खुद का घर हो, कार हो, परिवार की जिम्मेदारी न हो, घूमने–फिरने और आज से युग के हिसाब से शौक रखता हो और कमाई इतनी तगड़ी हो कि सारे सपने पूरे हो जाएं, तो ही बात बन सकती है। हालांकि सभी की अरमान ऐसे नहीं होते लेकिन चाहत सबकी यही है। शायद हर लड़की वाला यह नहीं सोचता कि उसका भी लड़का है तो, क्या मेरा पुत्र किसी ओर के लिए यह सब पूरा करने में सक्षम है? यानि एक गरीब बाप भी अपनी बेटी की शादी एक अमीर लड़के से करना चाहता है और अमीर लड़की का बाप तो अमीर से करेगा ही। ऐसे में सामान्य परिवार के लड़के का क्या होगा? यह एक चिंतनीय विषय सभी के सामने आ खड़ा हुआ है। संबंध करते वक्त एक दूसरे का व्यक्तित्व व परिवार देखना चाहिए ना कि पैसा। कई ऐसे रिश्ते भी हमारे सामने है कि जब शादी की तो लड़का आर्थिक रूप से सामान्य ही था मगर शादी बाद वह आर्थिक रूप से बहुत मजबूत हो गया। ऐसे भी मामले सामने आते है कि शादी के वक्त लड़का बहुत अमीर था और अब स्थिति सामान्य रह गई। इसलिए लक्ष्मी तो आती जाती है ये तो नसीबों का खेल मात्र है।

क्यों नहीं सोचता समाज

समाज सेवा करने वाले लोग आज अपना नाम कमाने के लिए लाखों रुपए खर्च करने से नहीं चूकते लेकिन बिडम्बना है कि हर समाज में बढ़ रही युवाओं की विवाह की उम्र पर कोई चर्चा करने की व इस पर कार्य योजना बनाने की फुर्सत किसी को नहीं है। कहने को हर समाज की अनेक संस्थाएं हैं वे भी इस गहन बिन्दु पर चिंतित नजर नहीं आती।

पहल तो करें

हो सकता है इस मुद्दे पर समाज में पहले कभी चर्चा हुई हो लेकिन उसका ठोस समाधान अभी नजर नहीं आता। तो क्यों नहीं बीड़ा उठाएं कि एक मंच पर आकर ऐसे लड़कों व लड़कियों को लाएं जो बढ़ती उम्र में हैं और समझाइश से उनका रिश्ता कहीं करवाने की पहल करें। यह प्रयास छोटे स्तर से ही शुरू हो। *रोशन भारत का हर समाज के नेतृत्वकर्ताओं से अनुरोध है कि वे इस गंभीर समस्या पर चर्चा करें और एक ऐसा रास्ता तैयार करें जो युवाओं को भटकाव के रास्ते से रोककर विकास के मार्ग पर ले जा सकें। स्वार्थ न समझकर परोपकार समझ कर सहयोग करें !!!

चेहरा नहीं, चरित्र बनाएँ सुन्दर

डॉ. मुनि शांतिप्रिय सागर गुरुदेव श्री ललितप्रभ जी ने प्रवचन के दौरान एक 30 वर्षीय युवक को खड़ा कर पूछा– आप मुंबई में जुहू चौपाटी पर चल रहे हैं और सामने से सुंदर महिला आ रही है तो क्या करोगे? युवक ने कहा– उस पर नजर जाएगी, उसे देखने लगेंगे। गुरुदेवश्री ने पूछा– वह महिला आगे बढ़ गई तो क्या पीछे मुड़कर भी देखोगे? उन्होंने कहा – हाँ, अगर धर्मपत्नी साथ नहीं है तो। (सभा में हँसी) गुरुदेवश्री ने फिर पूछा– जरा यह बताओ वह सुंदर चेहरा आपको कब तक याद रहेगा? युवक ने कहा– लगभग 5–10 मिनट तक, जब तक कोई दूसरा सुंदर चेहरा सामने न आ जाए।

गुरुदेवश्री ने उनसे कहा– अब जरा सोचिए आप जोधपुर से मुम्बई जा रहे हैं और मैंने आपको एक पुस्तकों का पैकेट देते हुए कहा कि मुम्बई में अमुक महानुभाव के यहाँ यह पैकेट पहँचा देना। आप पैकेट देने मुम्बई में उनके घर गए । उनका घर देखा तो पता चला कि ये तो बड़े अरबपति हैं। घर के बाहर 10 गाड़ियाँ और 5 चौकीदार खड़े हैं। आपने पैकेट की सूचना भिजवाई तो वे खुद बाहर आए। आपसे पैकेट लिया। आप जाने लगे तो आपको आग्रह करके घर में ले गए। पास में बैठकर गरम खाना खिलाया। जाते समय आपसे पूछा– किसमें आए हो? आपने कहा– लोकल ट्रेन में। उन्होंने ड्राइवर को बोलकर आपको गन्तव्य तक पहुँचाने के लिए कहा और आप जैसे ही अपने स्थान पर पहुंचने वाले थे कि उस अरबपति महानुभाव का फोन आया– भैया, आराम से पहुँच गए। अब आप बताइए कि आपको वे महानुभाव कब तक याद रहेंगे? युवक ने कहा – गुरुदेव! जिंदगी में मरते दम तक उस व्यक्ति को हम नहीं भूल सकते।

गुरुदेवश्री ने युवक माध्यम से सभा को संबोधित करते हुए कहा– यह है जीवन की हकीकत। सुंदर चेहरा दो दिन याद रहता है, पर हमारा सुंदर व्यवहार जीवन भर याद रहता है।

पूज्य पिताजी स्व. श्री कपूरचन्दजी जैन व माताजी स्व. श्रीमती अंगूरी देवी जैन की
पुण्य स्मृति में

विमल चन्द जैन (रेता वाले)

ग्रुप ऑफ कम्पनीज

DEALERS & SUPPLIERS OF SILICA SAND & OTHER GLASS RAW MATERIAL

AKHIL JAIN (M) 9899823557 • ANKIT JAIN (M) 9837478564

★ The Rajasthan Silica Sand Suppliers
★ Santosh Mineral & Chemical Co.
★ S.B. Jain Mineral Enterprises
★ Super Fine Mineral Traders
★ Shree Vimal Silica Traders
★ Quality Silica Traders

128-129, गणेश नगर,
सेक्टर प्रथम,
पानी की टंकी के सामने,
फिरोजाबाद (उ.प्र.)
सम्पर्क : 098372-53305
090128-74922
05612-260096

भावभीनी श्रद्धांजलि

स्व. श्री जैनी लाल जी जैन
(स्वर्गवास : 11 जनवरी 2014)

स्व. श्रीमती शान्ति देवी जैन
(स्वर्गवास : 29 दिसम्बर 1993)

श्रद्धावनत

विमल चंद जैन *(दामाद)* आबू रोड
कुसुम-हरीश जी *(पुत्री-दामाद)* अलवर
सुमन-अशोक जी *(पुत्री-दामाद)* आगरा

राजेन्द्र-शशी जैन *(पुत्र-पुत्रवधु)*
विनोद-शकुन्तला जैन *(पुत्र-पुत्रवधु)*
निशा जैन *(पुत्रवधु)*

आशीष-महक जैन (U.S.A.) *(पौत्र-पौत्रवधु)*
गौरव-निशू जैन *(पौत्र-पौत्रवधु)*
पुनीत-सुरूची जैन *(पौत्र-पौत्रवधु)*
आरव *(पड़पौत्र)* व प्रणवी *(पड़पौत्री)*

5405, लड्डू घाटी, पहाड़गंज, नई दिल्ली-110055
मोबाईल : 9971845125

BC-10D, DDA Flats, मुनीरका, नई दिल्ली-110023
दूरभाष : 9711159909, 9711132189, 26164755

के-84, शान्ति कुंज, बाल उद्यान मार्ग, उत्तम नगर, नई दिल्ली-110059
मोबाईल : 9810822840, 9810822844/43

मो.: 9891909666, 9717817342
Email : vinodshakun@gmail.com

श्री चन्द्रप्रभु नमः

दसवीं पुण्यतिथि पर
भावभीनी श्रद्धांजलि

स्व. श्री मंगतराम जी जैन

(निवासी-मौजपुर)

स्वर्गवास : 22-12-2009

आपके कार्य-परायणता, सच्चाई, परिश्रम एवं धर्म का वास के द्वारा जो आपने उच्च आदर्श स्थापित किए हैं, हम उनको आजीवन निभाने के प्रयासरत रहेंगे। हम आपके आदर्शवादी जीवन को श्रद्धापूर्वक नमन करते हैं।

श्रद्धावनत

पुत्र-पुत्रवधु :
राजेन्द्र कुमार-रतन जैन
दिनेश कुमार-निर्मला जैन
देवेन्द्र कुमार-तारा जैन
अशोक कुमार-मधु जैन
सुधीर कुमार-सुनिता जैन
एवं विजेन्द्र कुमार

धर्मपत्नी :
श्रीमती बर्फी देवी जैन

पुत्री :
श्रीमती विमला जैन
(पत्नी स्व. श्री राजेन्द्र प्रसाद जैन)

पौत्र-पौत्रवधु :
राहुल जैन-समर्पिता
नरेश जैन-तपस्या (नेहा)
दिलीप जैन-पूजा
नितिन जैन-पूनम
सौरभ जैन-रेनू

पड़ पौत्र, पौत्री :
चिरायुष (मन), नलिनी, तेजस्वनी पावनी, अन्नुश्री, दिवीत, सर्वज्ञ, श्रैयाष

निवास :- सी-117 (A) सावित्री पथ, मंगल मार्ग, बापू नगर, जयपुर
फोन : 9414581512, 9460832227

With Best Compliments From

Authorised Distributor for

- ★ Johnson & Johnson Ltd.
- ★ SD. BIO SENSOR
- ★ Ortho Clinical Diagnostics
- ★ Lifescan-Division, for one touch Brand Glucometers & Strips.
- ★ Biorad Laboratories
- ★ Alere Medical
- ★ Transasia Biomedical Ltd.
- ★ LILAC Medicare

Sanjay Jain - Rajeev Jain

S.R. Enterprises

223, Bichoon Market, Kishanpole Bazar, Jaipur-302 003
Ph.: (O) 2322089, 2323903 (R) 2546017 • Fax : 0141-4022089
(M) +91-98290 12628, 94140 76265

पत्रिका सहायता

★ **श्रीमती मधु जी जैन एवं श्री अजय कुमार जी जैन,** 106, गुलमोहर गार्डन फेस–2, शास्त्री नगर, कानपुर ने अपनी सुपुत्री सौ.कां. देविता जैन संग चि. निखिल जैन (सुपुत्र श्रीमती हेमा जैन एवं श्री नरेश जैन, इन्दौर) के दिनांक 17.11.2019 को सम्पन्न शुभ विवाहोपलक्ष पर पत्रिका सहायता हेतु रु. 2100/– सप्रेम प्रदान दिये। *(र.सं. डी–2201)*

★ **श्री लक्ष्मीकांत जी अजय कुमार जी जैन,** डी 9/54 चित्रकूट, वैशाली नगर, जयपुर ने अपने पूज्य पिताजी श्री भीकमचन्द जी जैन (परवैणी वाले) का 69 वर्ष की आयु में दिनांक 13 नवम्बर 2019 को स्वर्गवास होने पर उनकी पुण्य स्मृति में पत्रिका सहायता हेतु रु. 2100/– सप्रेम भेंट किये। *(र.सं. डी–2202)*

★ **श्री देवेन्द्र कुमार जी जैन नरेन्द्र कुमार जी जैन** (नागल सहाड़ी वाले) लोहामण्डी, अलवर ने चि. अक्षय संग सौ.कां. पायल (हेमाक्षी) (सुपुत्री स्व. श्री प्रेम चंद जैन बड़ोदाकान, अलवर) के दिनांक 01.12.19 को सम्पन्न शुभ विवाहोपलक्ष पर पत्रिका सहायता हेतु रु. 500/– प्रदान किये। *(र.सं. डी–2203)*

★ **श्रीमती मनोरंजना जी जैन** धर्मपत्नी स्व श्री नवल किशोर जी जैन, 1/75 काला कुआ हाउसिंग बोर्ड, अलवर ने अपने सुपुत्र चि. अंकित जैन संग सौ.कां. स्वाति जैन (सुपुत्री श्रीमती सुनीता जैन एवं श्री सुरेश चन्द जी जैन) के शुभ विवाहोपलक्ष्य पर पत्रिका को रु. 1100/– सप्रेम भेट किये। *(र.सं. डी–2204)*

★ **श्रीमती मंजू जी जैन एवं श्री भोजराज जी जैन,** 39–बी, गणेश नगर, धोलाभाटा, अजमेर ने अपनी सुपुत्री सौ.कां. अंकिता संग चि. नितेश (सुपुत्र श्रीमती उषारानी जैन एवं स्व. श्री सुभाष चंद जी जैन निवासी जयपुर) के दिनांक 28 नवम्बर 2019 को सम्पन्न शुभ विवाहोपलक्ष पर पत्रिका को रु. 500/– सप्रेम भेंट किये। *(र.सं. डी–2205)*

★ **श्रीमती विमलेश जी जैन एवं श्री राजकुमार जी जैन,** 3–बी, केशव कुंज, प्रताप नगर, आगरा ने अपने सुपुत्र चि. सिद्धार्थ (सुपौत्र स्व. श्री कपूर चंद जी जैन, पूर्व अध्यक्ष अ.भा. प. जैन महासभा) संग सौ.कां. सोनल सुपुत्री श्रीमती प्रवीना जैन एवं श्री ललित जैन निवासी बनारस के दिनांक 21 नवम्बर 2019 को सम्पन्न शुभ विवाहोपलक्ष पर पत्रिका को रु. 1100/– सप्रेम भेंट किये। *(र.सं. डी–2206)*

★ **श्री ओम प्रकाश जी जैन** (मण्डावरा वाले) ने अपने सुपौत्र चि. चन्द्र प्रकाश जैन (सुपुत्र श्री राजेश जैन) संग सौ.कां. राशिका जैन (सुपौत्री श्री मिश्रीलाल जैन एवं सुपुत्री श्री नरेन्द्र कुमार जैन, खेरली वाले) के दिनांक 23 नवम्बर 2019 को सम्पन्न शुभ विवाहोपलक्ष पर पत्रिका को रु. 500/– सप्रेम भेंट किये। *(र.सं. डी–2207)*

★ **श्रीमती शोभा जी जैन** (पुत्रवधु श्री मगनचन्द जैन) धर्मपत्नी श्री मुकेश कुमार जैन (फाजिलाबाद) की मासखमण तपस्या साध्वी प्रमुखा तेजकंवर जी म.सा. आदि ठाणा के प्रताप नगर, जयपुर के चातुर्मास 2019 में सआनन्द सम्पन्न होने के उपलक्ष में पत्रिका को रु. 1100/– सप्रेम भेंट किये। *(र.सं. डी–2208)*

पत्रिका सदस्यता

3036. **Smt. Neelam Ji Jain,** W/o Sh. Vijay Jain, 147, Bal Udhyan RD, Uttam Nagar, New Delhi-110059, Mob.: 9650704959 *(CR D-2209)*

3037. **Sh. Amit Kumar Ji Jain,** Flat No. 106, Orient Residency, Krishna Sagar Colony, Near Radha Nikunj Colony, Mansarovar Extn., Jaipur-302020 (Raj.), Mob.: 9828168915 *(CR D-2144)*

3038. **Sh. Shesh Kumar Ji Jain,** 26/M/17, Dabouli Ratan Lal Nagar, Kanpur-208022 (U.P.) *(CR D-2145)*

3039. **Sabita Rajesh Ji Jain,** A/404, Vastu Park, Near Ryan International School, Evershine Nagar, Malad (Wes), Mumbai *(CR D-2146)*

3040. **Sarita Dr. Sheetal Ji Jain,** A-3/56, 3rd Floor, Dhyneshwar Nagar, D.G. Maharani Road, Sewri, Mumbai-400015 *(CR D-2147)*

3041. **Sunita Dr. Manoj Ji Jain,** 8, Varsha Appartment, Behind Kotak Mahindra Bank, PO Vidhyanagari, CST Road, Kalina, Santacruz (East), Mumbai-400015 *(CR D-2148)*

महासभा सहायता

★ **श्री देवेन्द्र कुमार जी जैन नरेन्द्र कुमार जी जैन** (नागल सहाड़ी वाले) लोहामण्डी, अलवर ने चि. अक्षय संग सौ.कां. पायल (हेमाक्षी) (सुपुत्री स्व. श्री प्रेम चंद जैन बड़ोदाकान, अलवर) के दिनांक 01.12.19 को सम्पन्न शुभ विवाहोपलक्ष पर महासभा सहायता हेतु रु. 500/– प्रदान किये। *(र.सं. 4686)*

★ **श्री लक्ष्मीकांत जी अजय कुमार जी जैन,** डी 9/54 चित्रकूट, वैशाली नगर, जयपुर ने अपने पूज्य पिताजी श्री भीकमचन्द जी जैन (परवैणी वाले) का 69 वर्ष की आयु में दिनांक 13 नवम्बर 2019 को स्वर्गवास होने पर उनकी पुण्य स्मृति में महासभा सहायता हेतु रु. 2100/–सप्रेम भेंट किये। *(र.सं. 4687)*

★ **श्रीमती मंजू जी जैन एवं श्री भोजराज जी जैन,** 39–बी, गणेश नगर, धोलाभाटा, अजमेर ने अपनी सुपुत्री सौ.कां. अंकिता संग चि. नितेश (सुपुत्र श्रीमती उषारानी जैन एवं स्व. श्री सुभाष चंद जी जैन निवासी जयपुर) के दिनांक 28 नवम्बर 2019 को सम्पन्न शुभ विवाहोपलक्ष पर महासभा सहायता हेतु को रु. 500/– सप्रेम भेंट किये। *(र.सं. 4688)*

★ **श्रीमती विमलेश जी जैन एवं श्री राजकुमार जी जैन,** 3–बी, केशव कुंज, प्रताप नगर, आगरा ने अपने सुपुत्र चि. सिद्धार्थ (सुपौत्र स्व. श्री कपूर चंद जी जैन, पूर्व अध्यक्ष अ.भा. प. जैन महासभा) संग सौ.कां. सोनल (सुपुत्री श्रीमती प्रवीना जैन एवं श्री ललित जैन निवासी बनारस) के दिनांक 21 नवम्बर 2019 को सम्पन्न शुभ विवाहोपलक्ष पर महासभा सहायता हेतु रु. 1100/– सप्रेम भेंट किये। *(र.सं. 4689)*

विधवा सहायता

★ **श्री अरविन्द कुमार जी निर्मल कुमार जी जैन** (परवेणी वाले) अलवर ने विधवा सहायता हेतु रुपये 12,000/– सप्रेम भेंट किये। *(र.सं. 1684)*

★ **श्री राजेन्द्र कुमार जी अतुल कुमार जी जैन** (काला कुंआ, अलवर) ने स्व. श्रीमती शारदा देवी जी जैन की प्रथम पुण्यतिथि (दिनांक 30.12.2019) पर उनकी स्मृति में विधवा सहायता हेतु रुपये 2,100/– सप्रेम भेंट किये। *(र.सं. 1685)*

★ **श्री रमेश चन्द जी जैन पंकज जैन,** 12 रेलवे रोड, पालम कॉलोनी, नई दिल्ली ने विधवा सहायता हेतु रुपये 5,000/– सप्रेम भेंट किये। *(र.सं. 4723)*

★ **श्री देवेश जी जैन,** मिढाकुर आगरा ने अपने पुत्र दिशु जैन के जन्म दिन (दि. 27.11.19) पर विधवा सहायता हेतु रुपये 1,100/– सप्रेम भेंट किये। *(र.सं. 396)*

★ **श्री रमेश चन्द जी जैन पंकज जैन,** 12 रेलवे रोड, पालम कॉलोनी, नई दिल्ली ने विधवा सहायता हेतु रुपये 5,000/– सप्रेम भेंट किये। *(र.सं. 397)*

बधाई

प्रसन्न जैन पुत्र श्री महावीर प्रसाद जैन (करौली वाले) निवासी मोहन नगर, हिण्डौन का कर्मचारी चयन आयोग द्वारा आयोजित परीक्षा में कस्टम अधिकारी के पद पर चयन हुआ है। वर्तमान में प्रसन्न जैन श्रम मंत्रालय में कार्यरत हैं। इन्होंने अपनी 12वीं तक की शिक्षा निर्मल हैप्पी स्कूल से प्राप्त की। उन्होंने अपनी सफलता का श्रेय अपने माता–पिता, स्वयं की कड़ी मेहनत और गुरुजनों को दिया है। अखिल भारतीय पल्लीवाल जैन महासभा प्रसन्न की इस उपलब्धि पर उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हुए बधाई प्रेषित करती है।

****

सीए पारूल जैन पुत्री श्री महावीर प्रसाद जैन को एम.कॉम में प्रथम स्थान प्राप्त करने पर राज्यपाल द्वारा गोल्ड मैडल प्रदान किया गया। पारूल ने बी.कॉम में भी गोल्ड मैडल प्राप्त किया

था। अखिल भारतीय पल्लीवाल जैन महासभा पारूल की इस उपलब्धि पर उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हुए बधाई प्रेषित करती है।

शोक संवेदना

धर्मनिष्ठ सुश्राविका **श्रीमती सुशीला देवी जी जैन** धर्मसहायिका स्व. श्री मक्खन लाल जी जैन (बड़ौदाकान वाले) अलवर का 7 दिसम्बर 2019 को परलोकगमन हो गया है। आपका जीवन सरलता, मधुरता, सहिष्णुता, उदारता एवं सेवा भावना जैसे सद्गुणों से ओत–प्रोत रहा। अ.भा.प. जैन महासभा दिवंगत आत्मा को श्रृद्धांजलि अर्पित करती है।

श्रीमती सरोज जी जैन धर्मपत्नी श्री केदार चन्द जैन (मौजपुर वाले), 429, विजय नगर, अलवर का देवलोक गमन दिनांक 9 दिसम्बर 2019 को हो गया है। आप मिलनसार व सुहृदय महिला थीं। अ.भा.प. जैन महासभा दिवंगत आत्मा को श्रृद्धांजलि अर्पित करती है।

मुक्ति प्रभा जी म.सा. की सांसारिक माताजी **श्रीमती किरण देवी जी जैन** (कंजौली वाले) का देहावसान दिनांक 10 दिसम्बर 2019 को हो गया है। आप अत्यन्त धर्मपरायण, मिलनसार एवं सरल स्वभावी, मृदुभाषी थीं। अ.भा.प. जैन महासभा दिवंगत आत्मा को श्रृद्धांजलि अर्पित करती है।

श्री कस्तूर चंद जी जैन (मंडावर वाले) मुक्तानंद नगर, जयपुर का स्वर्गवास दिनांक 18 दिसम्बर 2019 को हो गया है। आप मिलनसार एवं सरल स्वभावी थे। अ.भा.प. जैन महासभा दिवंगत आत्मा को श्रृद्धांजलि अर्पित करती है।

श्री ईश्वर चन्द जी जैन, पालम का स्वर्गवास दिनांक 15 दिसम्बर 2019 को हो गया है। आप मिलनसार एवं सरल स्वभावी थे। अ.भा.प. जैन महासभा दिवंगत आत्मा को श्रृद्धांजलि अर्पित करती है।

श्री आशीष जैन के पिता एवं कोटा शाखा अध्यक्ष श्री प्रवीण चन्द जैन के छोटे भ्राता **श्री पवन जी जैन** का स्वर्गवास दिनांक 7 नवम्बर 2019 को हो गया है। वे सरल स्वभावी, धार्मिक, मृदुभाषी, देव, शास्त्र, गुरु में श्रृद्धा रखते थे। अ.भा.प. जैन महासभा दिवंगत आत्मा को श्रृद्धांजलि अर्पित करती है।

औषधिदान–महादान

सभी साणर्मी बन्धुओं से निवेदन है कि कृपया आप अपने विशेष पारिवारिक, सामाजिक, मांगलिक, धार्मिक एवं अन्य अवसरों पर (जैसे जन्मदिवस, जन्मोत्सव, विवाह दिवस, गृह व प्रतिष्ठान मुहूर्त एवं पूर्वजों की पुण्य तिथि आदि पर) अपनी सुविधानुसार श्री पद्मप्रभू जैन औषधालय, मेहताब सिंह का नौहरा, अलवर को औषधिदान देकर पुण्यार्जन में सहभागी बने। आप औषधि दान राशि संस्था के खाते में सीधे भी जमा कराकर सूचित करते हुए रसीद प्राप्त कर सकते हैं।

बैंक विवरण :–

खाता नाम : श्री पद्मप्रभू जैन औषधालय
खाता संख्या : 00870100016579
बैंक नाम : यूको बैंक, अलवर
IFS Code : UCBA0000087

संसार में जन्म लेने के लिए माँ के गर्भ में 9 महीने रुक सकते हैं। चलने के लिए 2 वर्ष, स्कूल में प्रवेश के लिए 3 वर्ष, मतदान के लिए 18 वर्ष, नौकरी के लिए 22 वर्ष, शादी के लिये 25 –30 वर्ष, इस तरह अनेक मौकों के लिए हम इंतजार करते हैं। लेकिन....गाड़ी ओवरटेक करते समय 30 सेकंड भी नहीं रुकते।

बाद में एक्सीडेंट होने के बाद जिन्दा रहे तो एक्सीडेंट निपटाने के लिए कई घण्टे, हॉस्पिटल में कई दिन, महीने या साल निकाल देते हैं।

कुछ सेकंड की गड़बड़ी कितना भयंकर परिणाम ला सकती है। जाने वाले चले जाते हैं, पीछे वालों का क्या! इस पर विचार किया, कभी किया नहीं। फिर हर बार की तरह, सिर्फ नियति को ही दोष।

इसलिये सही रफ्तार, सही दिशा में व वाहन संभल कर चलायें सुरक्षित पहुंचे। आपका अपना मासूम परिवार आपका घर पर इंतजार कर रहा है।

–आयुष जैन
सी–326 सूर्य नगर, अलवर

शाखा समाचार

महिला मंडल शाखा भरतपुर

अ.भा.प. जैन महिला मंडल शाखा भरतपुर द्वारा दिनांक 1.12.19 से 5.12.19 तक 5 दिवसीय योग शिविर रणजीत नगर स्थित जैन मंदिर दादावाड़ी भरतपुर में लगाया गया। योग का समय प्रातः 6 बजं से 7 बजे तक का रखा गया। शिविर में पतंजलि हरिद्वार के योगाचार्य श्री गिरधारी लाल जी के द्वारा अपनी सेवाएं निशुल्क दी गयी। शिविर में अनेक लोगों द्वारा अपनी बीमारियों से सम्बंधित परामर्श एवं उपचार भी लिया गया। दो दिन शाम को भी 6 बजे से 7.30 बजे तक बीमारियों से पूर्व बचाव एवं उपचार तथा स्वस्थ जीवन जीने के तरीके एव अन्य उपयोगी बातें बताने हेतु विशेष कक्षाएं योगाचार्य जी द्वारा ली गई। अनेक लोगों द्वारा लाभ लिया गया। महिला मंडल द्वारा योगाचार्य जी का स्वागत एवं बहुमान किया गया। महिला मंडल अध्यक्षा सुनीता जैन के द्वारा योगाचार्य गिरधारी लाल जी का आभार व्यक्त किया गया एव धन्यवाद दिया गया। इस प्रकार 5 दिवसीय शिविर सफलता पूर्वक संचालित हुआ।

भूल सुधार

नवम्बर माह की पत्रिका में विधवा सहायता के कॉलम में त्रुटिवश नाम गलत छप गया था, इसे निम्न प्रकार पढ़ा जावें। खेद है। *–सम्पादक*

★ **श्री जगदीश प्रसाद जी भागचंद जैन** (नागल सहाड़ी वाले) 126, स्कीम नं. 4, अलवर ने अपने पूज्य पिताजी स्व. श्री विजय चन्द जी जैन पटवारी की अष्टम पुण्य तिथि (दिनांक 19.12.2019) पर उनकी स्मृति में विधवा सहायता हेतु रुपये 12,000/– सप्रेम भेंट किये। *(र.सं. 395)*

शाखा आगरा (ग्रामीण)

आज दिनांक 27.11.2019 दिन बुधवार को मिढाकुर में दिशु जैन पुत्र श्री देवेश जैन के जन्मदिन पर श्री आदिनाथ दिगम्बर जैन मिढाकुर में श्री 1008 पुष्पदंत भगवान का जन्म व तप कल्याणक के दिन पंच परमेष्ठी विधान का आयोजन श्री सौरभ जैन शास्त्री (आगरा) द्वारा संगति व हारमोनियम के द्वारा कराया गया।

मुख्य वेदी पर श्री पुष्पेन्द्र जैन की मुख्य कलश द्वारा प्रथम अभिषेक करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ, शांति धाम का सौभाग्य श्री निर्मल जैन मिढाकुर को प्राप्त हुआ। वेदी पर दिशु जैन जयेश जैन की भागीदारी रही। ग्रामीण क्षेत्रों से पधारे श्री अगेन चन्द जी संरक्षक, श्री मुन्नालाल जी मिढाकुर वाले (आगरा), श्री रिखवचन्द जी भनकल, श्री विनोद कुमार जैन (पूर्व अध्यक्ष) अछनेरा, श्री सुनील कुमार जैन, श्री विनोद कुमार जैन अछनेरा, श्री नवीनचन्द जैन (अध्यक्ष) किरावली, श्री मनोज जैन, श्री कौशल जैन, श्री संजीव जैन मलपुरा, श्री राकेश जैन, श्री दिनेश चन्द जी, श्री मनीष जैन बरारा, श्री सुशील जैन, अरसेना, आदि सभी की उपस्थिति रही, विधान में उपस्थित श्रीमती कृष्णा जैन, श्रीमती सुमनलता जैन, श्रीमती गुड्डी जैन, श्रीमती गीता जैन, श्रीमती पिंकी जैन, श्रीमती पप्पी जैन, श्रीमती रेखा जैन, श्रीमती सुलोचना जैन, श्रीमती नीलम जैन, श्रीमती ममता जैन, श्रीमती लक्ष्मी जैन, श्रीमती कामिनी जैन, श्रीमती ज्योति जैन मिढाकुर इत्यादी, श्रीमती रीता जैन, श्रीमती निर्मला जैन अछनेरा, श्रीमती आकांक्षा जैन किरावली आदि सभी महिलायें की उपस्थिति रही। संरक्षक श्री अगेनचन्द जी व विनोद जैन (पूर्व अध्यक्ष) ने कहा दिशु जैन के जन्मदिन पर विधान कराकर सराहनीय कार्य किया। अन्त में श्री अनिल जैन (अध्यक्ष), श्री रूपचन्द जैन, अनिल जैन, (ज्योतिनगर) श्री स्वरूप चन्द जैन पटवारी जी एवं सभी ने दिशु जैन के जन्म दिन पर शुभ आशीर्वाद प्रदान किया। अन्त में सभी की भोजन व्यवस्था भी बहुत अच्छी रही।

अपना मूल्य जानें - स्वयं को पहचाने

कठिनाईयां और मुश्किल किसके जीवन में नहीं आती ? हर कोई इनसे जूझता है, लेकिन हर किसी के जूझने का तरीका भिन्न होता है। कोई इन्हें हंसी खेल समझकर जूझता है, कोई इन्हें शांति के साथ स्वीकारता है और उनका समाधान ढूंढता है तो किसी के लिए इनसे जूझना ही संभव प्रतीत नहीं होता। भिन्न–भिन्न दृष्टिकोण व मनःस्थिति के साथ व्यक्ति अपनी परिस्थितियों से निपटना चाहता है लेकिन बदले में ये परिस्थितियां उसे क्या देकर जाती हैं ? जो भी व्यक्ति इन्हें अत्यधिक तनाव की तरह लेते हैं, उनके जीवन की सुख शांति खो जाती है केवल परेशानियां ही परेशानियां ही दीखती प्रतीत होती हैं, जो कि हंसी खेल की तरह इन्हें लेते हैं, उनका जीवन भी हंसी खुशी से भर जाता है, लेकिन वे इन कठिनाईयों को पार करने में आंशिक सफलता प्राप्त करते है और जो इन्हें शांति व प्रसन्नता से स्वीकार करके अपनाते है, बिना किसी तनाव कि शांतिपूर्ण तरीके से जूझते हैं, वे न केवल इसमें सफल होते हैं, बल्कि जीवन के गंभीर अनुभवों के भी सहभागी बनते हैं।

जीवन में समस्याएं तब उठ खड़ी होती है, जब हम अपने मन की शांति व स्थिरता खो देते हैं और अंहकार की चाल चलने लगते हैं। ऐसी स्थिति में हमें अपनी वास्तविक मंजिल ठीक से दिखाई नहीं देती, बल्कि अंहकारवश प्रतिष्ठा व यश की भ्रमयुक्त दीवार ही दीखती है और फिर हम हैरान परेशान होकर उस ओर दौड़ते चले जाते है। यदि हमें वह भी नहीं मिलती, तो हमारी अशांति घटती नहीं, बल्कि दुगुनी बढ़ जाती है। हमारा अंहकार चोट खाए हुए सर्प की तरह फुंफकारता है क्रोधित वचन कहता है, तिलमिलाता है। जो मंजिल उसे शांति के रास्ते पर चलकर आसानी से मिल सकती है–अंहकार में अंधा होने पर वहीं मंजिल उससे कोसों दूर हो जाती है।

ऐसी परिस्थितियों में जब भी व्यक्ति की मुशकिलें बढ़ती है, कठिनाईयां बढ़ती हैं तो उसका न केवल मन, अपितु उसका शरीर भी विकृत दशा में जाने लगता है उसे न केवल अपना चेहरा अच्छा नहीं लगता अपितु उसका व्यवहार भी बिगड़ता लगता है। अपने व्यवहार से भी वह क्षुब्ध हो जाता है। उसे कभी अपने ही फैसलों पर गुस्सा आता है तो कभी लगता है कि वह किसी चीज के लायक ही नहीं है। आत्महीनता व असुरक्षा की भावना उसके मन में बस जाती है, आदत में शामिल होने लगती है। ऐसे व्यक्तियों के लिए अमेरिकी लेखिका लुई हे कहती है कि पिछले लंबे समय से जो व्यक्ति अपने को कोस रहे हैं और उन्हें कुछ भी फायदा नहीं हुआ, वे खुद को स्वीकारना शुरूकरें और फिर देखें कि क्या बदलाव आता है।

जीवन में जब अंहकार का प्रवेश हो जाता है, तो हम जीवन की वास्तविकता को ही स्वीकारना भूल जाते हैं और तरह–तरह के भ्रमों का शिकार होते हैं। अपनी वास्तविकता से दूर भागते हैं और दुनिया की दृष्टि में सर्वश्रेष्ठ–सर्वोत्तम बनना चाहते हैं। हमें हमारे आधार का ही पता नहीं होता और हम शिखर पर पहुंचना चाहते हैं। इसलिए सबसे पहले व्यक्ति को अपनी वास्तविकता से रूबरू होना चाहिए। हमारी जो भी कमियां हैं, उन्हें स्वीकारना चाहिए, जो भी गलतियां है, उन्हें मानना चाहिए और उन्हें सुधारने के लिए कटिबद्ध होना चाहिए।

हमारे जीवन से शांति छिन गई, सुकून गायब हो गया है, क्योंकि इस अंहकार के वशीभूत होकर लगातार हैरान–परेशान होकर काम में लगे रहते हैं। समस्याओं को देखकर अपनी शांति खो बैठते हैं। गलतियों व कमियों पर ही सदैव ध्यान आकर्षित करते हैं और नाराजगी व बहस में ही अपने अधिकांश समय को जाया करते हैं। इस बारे में अमेरिकी लेखक विलियम ऑर्थर वर्ड कहते हैं कि व्यक्ति की समझदारी इसी में है कि वह अपने गुस्से को समस्या की ओर ले जाए, न कि लोगों की तरफ। अपनी ऊर्जा वह समस्या के समाधान की ओर लगाए, बहानों पर नहीं।

जीवन में चाहे जैसी भी परिस्थितियां आएं, कितने भी उतार–चढ़ाव आए, यदि हम शांति के साथ परिस्थितियों को सुलझाना, उनसे निपटना सीख जाते हैं तो उसी क्षण से हम शांति के दूत बन जाते हैं।

अक्सर हम ऐसे व्यक्तियों से घिर जाते हैं या घिरे हुए से होते हैं, जो अशांत मनःस्थिति वाले होते हैं, ऐसे लोग जीवन के कई तरह के थपेड़े खाते हुए होते हैं। ऐसे लोगों के बीच भी हमें अपार शांति से रहना है तो सेन्ट फ्रांसिस की इस बात को सदैव याद रखना होगा कि तनाव से भरे क्षण हमें यह एहसास कराते हैं कि आपको शांति किसी अन्य व्यक्ति से नहीं मिलने वाली, बल्कि जीवन की हर परिस्थिति का सामना करने के लिए आपको उसे स्वयं ही चुनना होगा, हाँ, शांति के मार्ग का चुनाव व फैसला जब तक हमारा स्वयं का नहीं होगा, तब तक हम इसे न तो अपना सकेंगे और न ही इस पर चल सकेंगें। इस बात का भी हमें ध्यान रखना होगा कि हमारी चैतन्यता शांतिचित्त रहने का मार्ग जानती है, जरूरत है तो सिर्फ हमें सहज रहने व प्रेम, करूणा और क्षमा जैसे भावों को सहृदयता से अपनाने की।

TRAFO
Power & Electricals Pvt. Ltd.

TRAFO POWER & ELECTRICALS PVT. LTD.

AN ISO 9001:2008 COMPANY

PRODUCTS

-POWER & DISTRIBUTION TRANSFORMERS

-PRESSED STEEL RADIATORS

-SPECIAL PURPOSE TRANSFORMERS

-PACKAGE SUBSTATION

CONTACT

Trafo Power & Electricals Pvt. Ltd.
C-20 Site-C U.P.S.I.D.C., Industrial Area, Sikandra,
Agra, Uttar Pradesh - 282007, India

Phone No : +91-562-3290391
Fax : +91-562-2640388
E-mail : info@trafo.co.in

जोश और होश

जनरेशन गैप अर्थात पीढ़ियों का अंतर आज की सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण समस्य है। गत अर्द्ध शताब्दी में दुनिया जिस तेजी से बदली है उतना परिवर्तन पिछली कई शताब्दियों में नहीं हुआ। परिवर्तन की गति जितनी तेज होगी, जनरेशन गैप की समस्या भी उतनी ही उग्र रूप से सामने आयेगी। यही कारण है कि आज बाप और बेटों के विचारों में काफी असमानता आ गयी है। पहली पीढ़ी कितनी ही आधुनिक हो, पर अगली पीढ़ी के आते–आते वह अपने कार्यो, विचारों में अगली पीढ़ी वालों की दृष्टि में काफी पुरातनपंथी लगने लगती है। आज यह दूरी इतनी बढ़ती जा रही है लगता है कहीं उन्हें जोड़ने वाला तन्तु ही टूट न जाये। वैसे सदा हीयह अन्तर किसी न किसी रूप में विद्यमान रहा है, पर संबंध टूटने की स्थिति कभी नहीं बनी। आज अपने को अप–टू–डेट मानने वाले युवक अपने ही बुजुर्गो को एक दम आउट ऑफडेट मानने लगे हैं। आज हमारी आदत ही कुछ बातों को बढा चढ़ा कर करने की हो गयी है। बात कुछ दोनों को ही परस्पर एक दूसरे को समझने की ओर समझ कर सामंजस्य करने की है। यह एक सर्वमान्य सत्य है कि युवकों में जोश और प्रौढ़ों में होश ही प्रधानता होती है। युवकों में जितना जोश होता है, कुछ कर गुजरने की तमन्ना होती है, उतना अनुभव नहीं होता। इसी प्रकार प्रौढ़ों में जितना अनुभव होता है, उतना जोश नहीं।

काम जोश से होता है, शक्ति से होता है, इस बात की अपेक्षा करना हितकर नहीं है। सुनिश्चित योजना होश में व अनुभव से बनती है और उसकी क्रियान्विति के लिये पूरी शक्ति और जोश की आवश्यकता होती है। बिना जोश का होश शक्तिहीन घोड़े की सवाई है और बिना होश का जोश बिना लगाम की घोड़े जैसी सवाई है। दोनों सवार अपने गन्तव्य पर नहीं पहुंच पायेंगे। गन्तव्य पर पहुंचने के लिये शक्तिशाली जोशीले घोड़े और अनुभव का सही मार्गदर्शन बहुत जरूरी है। आज समाज में देश में दोनों ही चीजं विद्यमान है, न जोश की कमी है, न होश की बस आवश्यकता समुचित नियोजन की है। समुचित नियेाजन का उत्तर दायित्व होशवालों पर अधिक है क्योंकि वे अनुभवी हैं। जोश वालों की जिम्मेदारी मात्र इतनी है कि वे अपने अनुभवी बुजुर्गों की तर्कसंगत बात सुने, समझे और ससम्मान कार्यक्रम परिणत करें। बुजुर्गों का मार्गदर्शन भी सीधा सच्चा बिना लम्बे उपदेश के आपेक्षित हैं।

दोनों पीढ़ियों से मैं अपेक्षा करता हूं कि वे कार्यो से, क्रियाकलापों से दोनों पीढ़ियों की दूरी को कम करेगी, पाटेगे बढ़ाएगे नहीं। दोनों की सम्मलित शक्ति देश को व समाज को आगे बढ़ायेगी।

बुजुर्गो के अनुभवों से पूरा –पूरा लाभ उठाते हुए युवक निरन्तर आगे बढ़े इसी पवित्र भावना के साथ में विराम लेती हूं।

–संतोष जैन
मानसरोवर, जयपुर

आवश्यक सूचना

श्री पल्लीवाल जैन पत्रिका के सदस्यों को पत्रिका न मिलने/देरी से मिलने की सूचना प्राप्त होने पर डाक विभाग में शिकायत किये जाने पर डाक विभाग से जानकारी प्राप्त हुयी है कि सम्भवत: एक स्थान पर एक समान नाम के व्यक्तियों के होने से/पत्रिका में पते के साथ पिन कोड नं. न होने/गलत होने के कारणों से पत्रिका नियत समय नहीं पहुँच पा रही होगी। अत: समस्त सदस्यों से अनुरोध है कि आपके पते को सही/दुरस्त किये जाने हेतु आप निम्न जानकारी (अंग्रेजी Capital अक्षरों में)–

(1) सदस्यता संख्या, (2) सदस्य का नाम, (3) सदस्य के पिता/पति का नाम, (4) पता, (5) जिले का नाम, (6) राज्य का नाम, (7) पिन कोड नं., (8) दूरभाष नं. / मोबाइल नं.

संयोजक के पते पर लिखित में अथवा ईमेल द्वारा अवगत कराने का श्रम करावें। ***–संयोजक***

समस्त पाठकों से निवेदन है कि श्री पल्लीवाल जैन पत्रिका हेतु वैवाहिक विज्ञापन, पते में संशोधन व अन्य प्रकाशनार्थ सामग्री व्हाट्सएप पर न भेंजे। समस्त सामग्री ई–मेल या पोस्टल डाक से ही भिजवायें।

बुजुर्गों का करें सम्मान

मातृ देवो भवः, पितृ देवो भवः – इस पंक्ति को बोलते हुए हमारा शीष श्रद्धा से झुक जाता है और सीना गर्व से तन जाता है । यह पंक्ति सच भी है जिस प्रकार ईश्वर अदृश्य रहकर हमारे माता पिता की भूमिका निभाता है उसी प्रकार माता पिता हमारे दृश्य, साक्षात ईश्वर है। इसीलिए तो भगवान गणेश ने ब्रह्माण्ड की परिक्रमा करने की बजाय अपने माता पिता शिव– पार्वती की परिक्रमा करके प्रथम पूज्य होने का अधिकार हांसिल कर लिया था, किन्तु आज के इस भौतिक वाद (कलयुग) में बढ़ते एकल परिवार के सिद्धान्त तथा आने वाली पीढ़ी की सोच में परिवर्तन के चलते ऐसा देखने को नही मिल रहा है। कुछ सुसंस्कारित परिवारों को छोड़ दें तो आज अधिकांश परिवारों में बुजुर्गों को भगवान तो क्या, इंसान का दर्जा भी नही दिया जा रहा है। किसी जमाने में जिनकी आज्ञा के बगैर घर का कोई कार्य और निर्णय नही होता था। जो परिवार में सर्वोपरि थे। और परिवार की शान समझे जाते थे आज उपेक्षित, बेसहारा और दयनीय जीवन जीने को मजबूर नजर आ रहे है यहां तक कि तथा कथित पढ़े लिखे लोग जो अपने आप को आधुनिक मानते है, अपने आपको परिवार की सीमाओं में बंधा हुआ स्वीकार नही करते हैं और सीमाऐं तोड़ने के कारण पशुवत व्यवहार करना सीख गये हैं वे अपने माता पिता व अन्य बुजुर्गों को ''रूढ़ीवादी'', ''सनके हुये'' तथा ''पागल हो गये ये तो'' तक का सम्बोधन देने लगे हैं। क्या आप नहीं जानते मां बाप ने आपके लिए क्या–क्या किया है या जानते हुये भी अनजान बनना चाहते हैं ? मैं आपकी याददास्त इस लेख के माध्यम से लौटाने की कोशिश कर रहा हूँ।

वो आपकी मां ही है जिसने नौ माह तक अपने खून के एक–एक कतरे को अपने शरीर से अलग करके आपका शरीर बनाया है और स्वयं गीले में सोकर आपको सूखे में सुलाया है, इन्ही मां–बाप ने अपना खून पसीना एक करके आपको पढ़ाया–लिखाया, पालन–पोषण किया और आपकी छोटी से छोटी एवं बड़ी से बड़ी सभी जरूरतों को अपनी खुशियों, अरमानों का गला घोंट कर पूरा किया है। कुछ मां–बाप तो अपने बच्चे के उज्जवल भविष्य के खातिर अपने भोजन खर्च से कटौती कर करके उच्च शिक्षा के लिए बच्चों को विदेश भेजते रहे। उन्हें नहीं मालूम था कि बच्चे अच्छा कैरियर हासिल करने के बाद उनके पास तक नहीं आना चाहेंगे। वे मां–बाप तो अपना यह दर्द किसी को बता भी नहीं पाते। यह आपके पिता ही हैं जिन्होंने अपनी पैसा–पैसा करके जोड़ी जमा पूंजी और भविष्य निधि आपके मात्र एक बार कहने पर आप पर खर्च कर दी और आज स्वयं पैसे–पैसे के लिए मोहताज हो गये। तिनका–तिनका जोड़कर आपके लिए आशियाना बनाया और आज आप नये आशियाने के लिऐ उन पर भावनाओं से लबालेज उनके आशियाने को बेच देने का दवाब बना रहे हैं, उनके तैयार नहीं होने पर उन्हें अकेला छोड़कर अपनी इच्छा की जगह जाकर उन्हें दण्ड दे रहे हैं। आपने कभी सोचा है कि मां–बाप ने यह सब क्यों किया।

आपको मालूम होना चाहिए कि वे केवल इसी झूठी आशा के सहारे यह सब करते रहे कि आप बड़े होंगे कामयाब होगें और उन्हें सुख देंगे और आपकी कामयाबी पर वो इठलाते फिरेंगे। मां–बाप जो मुकाम स्वयं हासिल नहीं कर पाये उन्हें आपके माध्यम से पूरा करना चाहते हैं लेकिन बच्चे उनका यह सपना चूर–चूर कर देते हैं।

कुछ परिवारों में बुजुर्गों को ना तो देवता समझा जाता है और ना ही इन्सानों जैसा व्यवहार किया जाता है बस बुजुर्ग उपेक्षित, बेसहारा और एकान्तवास में रहकर ईश्वर से अपने बूलावे का इन्तजार मात्र करते रहते हैं।

आप सोच रहे होंगे कि हम तो ऐसा नहीं करते लेकिन मैं आपको बताना चाहुंगा कि अनजाने में आपसे ऐसा हो जाता है जिससे मां–बाप का दिल दुख जाता है। नीचे कुछ पंक्तियों में ऐसी ही बातें मैं आपके सामने रख रहा हूं।

आज हम अपने आसपास किसी ना किसी बुजुर्ग महिला या पुरूष पर अत्याचार होते देखकर, 'उनका निजी मामला है' ऐसा कहकर क्या अपनी मौन स्वीकृति नहीं दे रहे है ? आज कामकाजी महिलाओं की संख्या बढ़ी है यह अच्छी बात है लेकिन इसका तात्पर्य यह नहीं है कि बुजुर्ग मां–बाप आपके मात्र चौकीदार और आया बनकर रह जायें। बुजुर्ग महिला अपने पोते–पोतियों की दिनभर सेवा करे, शाम को बेटे–बहू के ऑफिस से आने पर उनकी सेवा करें। क्या इसी दिन के लिए पढ़ी–लिखी कामकाजी लड़की को वह अपनी बहू बनाती है। लेकिन क्या करे मां का बड़ा दिल वाला तमगा जो उसने लगा रखा है सभी दर्द को हंसते–हंसते सह लेती है। कभी उसके दिल के कोने में झांक कर देखो, छिपा हुआ दर्द नजर आ जायेगा। यदि आप अपना कर्ज चुकाना चाहते है तो दिल के उस कोने का दर्द अपने प्यार से मिटा दो।

–आयुष जैन
सी–326, सूर्य नगर, अलवर

PRODUCTS :
Transmission Line Towers (HT&LT), Telecom Towers,
Wind Mill Structures, Sub-Station Structures, Lattice Structures,
RSJ Poles & GI Earthing Strips.

FULLY EQUIPPED ULTRA MODERN FABRICATION AND GALVANIZING PLANT WITH EOT CRANES, HOISTS, POWER TROLLEYS, TESTING LABS & ETP SYSTEM TO ENSURE GREEN ENVIRONMENT

Fabrication & Galvanizing done as per
IS, BIS, ASTM, DIN & ISO Standards
Bath Size : 9m (L) x 0.8m (W) x 1.4m (D)
Plant Capacity : 18000 Tons / Year

Vijay Transmission
PVT. LTD.

Plant :
PNH No. 100, Village Kanhera, Block Dharsiva, Uria Acholi Marg, Dist. Raipur-492001
Tel.: (0771) 305 4900 • Fax : (0771) 232 3162

Corporate Office :
210, 211, 2nd Floor, Kamla Space, S.V. Road, Santacruz (West), Mumbai-400054
Tel.: 022-262183401 • Fax : +91-022-26609915
E-mail : info@vijaytransmission.com

पत्रिका विज्ञापन सहयोग राशि

	वार्षिक	मासिक
कवर पृष्ठ अंतिम (मल्टीकलर)	31,000/-	
कवर पृष्ठ द्वितीय (मल्टीकलर)	25,000/-	
कवर पृष्ठ तृतीय (मल्टीकलर)	25,000/-	
कलर पृष्ठ (मल्टीकलर)	21,000/-	2,500/-
अंदर पृष्ठ श्वेत श्याम	15,000/-	
अंदर पृष्ठ आधा श्वेत श्याम	10,000/-	
पुण्य स्मृति आधा पृष्ठ श्वेत श्याम	10,000/-	1,000/-
पुण्य स्मृति पूरा पृष्ठ श्वेत श्याम	15,000/-	1,500/-

पत्रिका

पत्रिका वार्षिक शुल्क	50/-	5/-
पत्रिका आजीवन सदस्य	500/-	
पत्रिका संरक्षक सदस्य	11,000/-	
पत्रिका हितैशी सदस्य	5100/-	

* पत्रिका की राशि 'श्री पल्लीवाल जैन पत्रिका' के नाम से एवं
* महासभा की सहयोग राशि 'अखिल भारतीय पल्लीवाल जैन महासभा' के नाम से ड्राफ्ट/चैक द्वारा भेजें।

- **पत्रिका हेतु प्रकाशनार्थ सामग्री पत्रिका संयोजक/सम्पादक के पास ही प्रेषित करें, जो प्रत्येक माह की 15 तारीख तक प्राप्त होनी चाहिये।**
- पत्रिका हेतु सदस्यता शुल्क/विशेष सहायता संयोजक के पास प्रेषित करें।
- पत्रिका में स्थान उपलब्ध होने पर ही विज्ञापन का प्रकाशन किया जायेगा।
- गत वर्ष के रंगीन विज्ञापनदाताओं की बकाया विज्ञापन सहयोग राशि शीघ्र संयोजक के पास भिजवाने का कष्ट करें।

सूचना : (अ) रु. 500/- से कम के आर्थिक सहयोग राशि वालों के नाम पत्रिका में प्रकाशित नहीं किये जायेंगे।
(ब) जो सदस्य महानुभाव अपनी पत्रिका कोरियर द्वारा प्राप्त करना चाहते हैं वह रु. 40/- प्रति माह के हिसाब से एक वर्ष का शुल्क रु. 480/- श्री पल्लीवाल जैन पत्रिका को भेजें।

वैवाहिकी

सूचना

1. पत्रिका में प्रकाशित वर/वधू की तलाश के अंतर्गत विवरण की सत्यता से सम्पादक अथवा पत्रिका का किसी भी प्रकार का दायित्व नहीं हैं। वर/वधू दोनों पक्ष पूर्ण जानकारी अपने स्तर से करने के बाद ही संबंध स्थापित करें।
2. पात्रों के विवरण में आयु के स्थान पर जन्मतिथि तथा आय चार/पांच अंको में, के स्थान पर वास्तविक आय लिखें।

नोट : प्रकाशन योग्य सामग्री एवं संबंध होने की सूचना पत्रिका संयोजक को प्रषित करें जिससे आगामी अंक में विज्ञापन का प्रकाशन किया जाये या न किया जाये।

वर की तलाश

★ **कृति जैन** पुत्री श्री अनिल कुमार जैन, जन्मतिथि 18.11.1994 (प्रातः 03:52, फ़िरोज़ाबाद), लम्बाई– 5'–3'', रंग गोरा, शिक्षा– एम.बी.ए (एच.आर.), गोत्र : स्वयं– बारोलिया, मामा– गंगवाल, संपर्क : 58ए/36/1बी, जैन मंदिर के पीछे, ज्योति नगर, अर्जुन नगर, आगरा–282001, मो.: 9837662521, 9897492759, ईमेल : aniljainfzd58@gmail.com *(नवम्बर)*

★ **गरिमा जैन** पुत्री श्री सुशील कुमार जैन, जन्मतिथि 17.05.1995 (प्रातः 5:00 बजे, फिरोजाबाद), शिक्षा– बी.टेक. (Electrical Engineering), गोत्र : स्वयं– सलावदिया, मामा– अठवर्षिया, सम्पर्क : म.नं. 10, टीचर्स कॉलोनी, रामगंजमंडी, जिला कोटा, मो.: 8619280423, 7976506214 *(नवम्बर)*

★ **आशिमा जैन** पुत्री श्री पवन कुमार जैन, जन्मतिथि 25.07.1996 (प्रातः 7:45 बजे), कद– 5'–1'', शिक्षा– एम.ए. (हिन्दी), रंग गोरा, सम्पर्क : श्री पवन कुमार जैन, मुन्शी बाजार, बडेरिया पारी, अलवर, मो.: 8824807040, 8239389222 *(नवम्बर)*

★ **डॉ. अदिती जैन** पुत्री श्री विमल चन्द जैन, जन्मतिथि 19 अक्टूबर 1987 (दोपहर 1 बजे), कद 5'–3'', शिक्षा– एम.बी.बी.एस., एम.डी. एनेस्थीसिया आई.डी.सी.सी.एम., मनीपाल हॉस्पीटल, सीकर रोड, जयपुर में कार्यरत, गोत्र : स्वयं– कोटिया, मामा– चौधरी, सम्पर्क : 43, जय नगर, रोड नं. 3 के सामने, विश्वकर्मा इण्डस्ट्रीयल ऐरिया, मुरलीपुरा, जयपुर–302039, मो.: 9829016524, व्हाट्सएप नं. 9829189246 *(दिसम्बर)*

★ **नवोदिता जैन** पुत्री श्री संजीव कुमार जैन, जन्म तिथि 31.03.1994 (प्रातः 11.45 बजे, खेरली), रंग गोरा, कद 5'–3'', शिक्षा– बी.ए., एम.ए. (पब्लिक ऐडमिनिस्ट्रेशन), गोत्र : स्वयं–बयानिया, मामा– चौडबम्बार, सम्पर्क : 87, प्रताप नगर, झोटवाड़ा, जयपुर, मो.: 8949352686, 9694635099 *(दिसम्बर)*

★ **Lipi Jain** (Anshik Manglik) D/o Sh. Nalin Kumar Jain, DoB 10.11.1992 (at 02:38 pm, Jaipur), Height 5'-3", Education B.Tech. (CS), Working in Pvt. Company on a package 3.50 LPA, Gotra : Self- Ladodiya, Mama- Maimuda, Contact : 9460765484, 9460434712 *(Sep.)*

★ **Yukta Jain** D/o Sh. Satyendra Kumar Jain, DoB 16.11.1993 (at 9:35am, Agra), Height 5ft., Education M.Com., B.Ed., Profession- Teacher, Gotra : Self- Chaurbambar, Mama- Kotiya, Contact : H.No. 9, Vishvkarma Vatika, Shahganj Road, Bodla, Agra, Mob.: 7520615933, 9410857876 *(Sep.)*

★ **Surbhi Jain** D/o Sh. J.K. Jain, DoB 23.09.1993 (at 7:55 AM, Gangapur City), Height- 5'-2", Occupation- Senior Associate, HR, Mindtree Ltd, Bangalore, Education- MBA (XIME, Bangalore), B.Tech (RCEW, Jaipur), Gotra : Self- Rajoriya, Mama- Chaudhary, Contact : E-1/325, Chitrakoot, Gandhi Path, Jaipur-302021, Mob.: 9887734133, 87694 21338 *(Sep.)*

★ **Astha Jain** D/o Late Sh. Vinai Kumar Jain, DoB 30.12.1989 (at 09:15 pm, Farrukhabad), Height 5'-3", Education- B.Tech., Working in TCS (Package Rs 10LPA), Gotra : Self- Salawadia, Mama- Badwasia, Contact : 2/414, Aravali Vihar, Alwar, Mob.: 9560035236, 7597572759, Email : arihant.arihant@gmail.com *(Sep.)*

★ **Divya Jain** D/o Sh. Naresh Chandra Jain, DoB 11.04.1994 (at 10:35 am, Anand, Gujarat), Height 5'-4" , Education- Bachelors in Computer Engineering, Working in Private Company, Ahemdabad, Gotra : Self- Sarang, Mama- Thakuria, Contact : 17, Krishana Park Society, Chavdapura, Jitodia Road, Anand, Gujarat, Mob.: 8200605454, 9427549521, Email : nareshjain6760@gmail.com *(Sep.)*

★ **Pratibha Jain** D/o Sh. Arvind Kumar Jain, DoB 20.02.1993 (at 4.30 pm, Jaipur) Height 5'-2", Education- B.Tech. (ECE), Occupation- Jr. Assistant, Ground Water Deptt. Jaipur, Gotra : Self- Nangeshwariya, Mama- Ambia, Contact : 75/215, Sector 7, Pratap Nagar, Jaipur, Mob.: 9571701507, 8385026055 *(Sep.)*

★ **Sapna Jain** D/o Sh. Mahendra Kumar Jain, DoB Oct. 1991, Height 5'-3", Fair Color, Education- M.Com, Job- Silver Export House, Jaipur, Gotra : Self- Kotia, Mama- Bhamaria, Contact : 9314851301

(Sep.)

★ **Yamini Jain** D/o Sh. Bharat Bhushan Jain, DoB 23.12.1992 (at 10:34 am, Alwar), Height 5Ft., Education- BBA, Occupation- PO in Bank of Maharashtra, Gotra : Self- Bairasthak, Mama- Barolia, Deficiency in Both Hands, Contact : 4, Maglanser Circle, Vijai Mandir Road, Alwar, Mob.: 9928653997 *(Sep.)*

★ **Shikha Jain** D/o Sh. Pavan Jain, DoB 07.05.1992 (at 08:07 am, Alwar), Height 5'-7", Education- CA, B.Com., Working with Price Waterhouse Copper & Co. LLP, Gurgaon, Salary- 15 LPA, Gotra : Chaudhary, Contact : 1/544, Aravali Vihar, Kala Kuan, Alwar, Mob.: 9414020800 *(Sep.)*

★ **Deepali Jain** (Manglik) D/o Sh. Ajeet Kumar Jain, DoB 31.10.1992, Height 5'-1", Education- B.Tech., M.Tech (EC), Working with ICICI Bank Hindaun City, Contact : Sh. Ajeet Kumar Jain, Opp. Chandra Sec. School, Hindaun City, Dist. Karauli-322230, Mob.: 9414400944 *(Sep.)*

★ **Chanchal Jain (**Anshik Mangalik) D/o Sh. Madan Mohan Jain, DoB 03.03.1987 (at 12:10 pm,New Delhi), Height -5'3", Education- B.Com, Working as Administration Executive having Income ranges : 3-5 LPA, Gotra : Self- Kotiya, Mama- Shreepat, Contact : 9971398320, 9811681949 *(Nov.)*

★ **Deepali Jain** D/o Sh. Satish Chand Jain, DoB 12.11.1993 (at 3:30 pm, Agra) Height 5'-2", Fair Complexion, Education- B.Tech (CS), Occupation- Working as HR (Recruiter) in Talent toppers, Noida, Gotra : Self- Salawadia, Mama- Bhatariya, Contact : HIG-49, Sector-9, Awas Vikas Colony, Agra, Mob.: 9412723536, 9756654633 *(Nov.)*

★ **Nitya Jain** D/o Sh. Narendra Kumar Jain, DoB 28.05.1991 (11:25am, Alwar), Height- 5'-4", Education- B.Tech. (Hon.), Pursued MBA in Finance (SCDL), Job Profile- Working as Business Analyst in Enuke Software Pvt. Ltd., Gurgaon, Gotra : Self- Maimuda, Mama-Barolia, Contact : 60, Scheme No. 8 (Extn.), Gandhi Nagar, Alwar, Mob.: 9413737641, 9414794395, Email : narendrajain0204@gmail.com *(Nov.)*

★ **Karishma Jain** D/o Sh. V.K. Jain (Nowgaon, Alwar wale), DoB 07.08.1991, Height 5'-3", Education- MBA in HR from Tata Institute of Social Science, Mumbai, Currently Working with Turtle Mint Mumbai as HR Professional, Salary 12 LPA, Gotra : Self- Aamiya, Mama- Bayania, Contact : Sh. V.K. Jain (Mumbai) 916755866, Shashi Jain 9820827871 *(Nov.)*

★ **Khushboo Jain** D/o Sh. Jinesh Jain (Nowgaon, Alwar wale), DoB 03.08.1993 (at 5:07 am, Jaipur), Height- 5'-1", Education- Chartered Accountant & Persuing CS Final Group, Currently Working with PWC (MNC) as Consultant, Gotra : Self- Aamiya, Mama- Bayania, Contact : Sh. Jinesh Jain (Times of India Jaipur), Mahesh Nagar Jaipur, Mob.: 9413339287, 9414845568 *(Nov.)*

★ **Ruchi Jain** D/o Sh A.K. Jain, DoB 04.05.1990, Height- 5'-2", Education- BBA, Degree Course in Mass Communication, Gotra : Self- Dhaati, Mama- Bahttriya, Contact : Sh. A.K. Jain, Jaipur, Mob.: 9414049584 *(Nov.)*

★ **Sakshi Jain** (Manglik) D/o Sh. Sunil Kumar Jain, DoB 02.10.1994 (at 07:37pm, Delhi), Education- M.Com., M.Ed., Occupation- School Teacher in Delhi, Gotra : Self- Chaurambar, Mama- Baroliya, Contact : 2/17, New Market, Sadar Bazar, Delhi Cantt, Mob.: 9818342651, 9899441662 *(Nov.)*

★ **Shweta Jain** D/o Lt. Sh. Subhash Chandra Jain, DoB 25.07.1993 (at 06:58 pm, Alwar), Height 5'-3.5", Fair and Smart, Education- B.Tech (NIT Jalandhar), M.Tech (NIT Surathkal), Working in GE Vadodara, Income- 8.5 LPA, Gotra : Self- Ladodiya, Mama- Nangeswariya, Contact : Poornima Jain, Alwar, Mob.: 7597738470, Email : scjpar@gmail.com *(Nov.)*

★ **Shikha Jain** D/o Sh. Munshi Lal Jain, DoB 13.04.1996 (at 09:15 pm, Jaipur), Height- 5'-2", Education- M.Com. (A.B.S.T.), Pursuing further studies for NET Exam, Gotra : Self- Atthvarshiya, Mama- Bahattariya, Contact : A-1/2, Tulsi Nagar, Shastri Nagar, Jaipur, Mob.: 9414893626 *(Nov.)*

★ **Matiri Jain** D/o Sh. Gajendra Kumar Jain, DoB 16.02.1996 (at 06:25 am, Jaipur), Height 5'-5", Fair Colour, Education- MCA, Tally, RS-CIT, Job- Teaching, Gotra : Self- Athavarsiya, Mama- Baintariya, Contact : B-54, Kirti Nagar, Near Jain Mandir, Tonk Road, Jaipur, Mob.: 9785812282, 9680154136, 8058157610 *(Nov.)*

★ **Anshu Jain** D/o Sh. Pawan Kumar Jain, DoB 06.12.1991 (at 1:15 PM, Kota), Height- 5'-2.5", Education- B.Tech., M.Tech., Occupation- Counsellor at LBS Group, Gotra : Self- Chaurbambar, Mama- Kathumaria, Contact : 36, Basant Vihar Special, Behind Modi College, Kota-324009, Mob.: 9829242662, 6376463993, Email : pawankumarjain56@yahoo.com, pawan42662@gmail.com *(Nov.)*

★ **Priyanka Jain** (Manglik) (Divorsed) D/o Sh. Saral Kumar Jain, DoB . . (at Aligarh), Height '- ", Fair Colour, Education- B.A., Gotra : Salf- Jewariya, Mama- Sankhiya, Contact : Jain Street, Chippite, Aligarh, Mob.: , *(Nov.)*

★ **Shruti Jain** D/o Sh. Sanjeev Jain, DoB 5. 9. 9 (at 6:50 am, Agra), Height '-3", Education- NIFT Bangalore (Fashion Designer), Presently Working with Zivane (Active Wear, Bangalore), Gotra : Kher, Contact : Sh. Shashi Kumar Jain (Grand Father), 145, Jaipur House, Agra, Mob.: 8218602577, 9675666878 *(Nov.)*

★ **Riya Jain** (Manglik) D/o Sh. Sunit Kumar Jain, DoB 30.11. 94 (at 00:38 am, Alwar), Height ft., Education- B.Tech., PG Diploma in Broad Cast Journalism, Gotra : Self- Barwasia, Mama- Gandharva, Serice at Rajasthan Patrika (Digital Division) Jaipur, Contact : B-92, Riddhi-Siddhi Nagar, Kunhadi, Kota, Mob.: 9413349533, 9588298235, Email : sunitjain321@gmail.com *(Nov.)*

★ **Deepika Jain** (Manglik) S/o Sh. Dharm Chand Jain, DoB 4.10.1992 (at 12:05 PM, Delhi), Height- 5'-3", Education- B.Com., MBA, Job- Working in Cognizant, Gotra : Self- Angras, Mama- Sangarwasiya, Contact : 9625400435, 7701836987 *(Nov.)*

★ **Archana Jain** D/o Sh. Sumer Chand Jain, DoB 11.11.1989 (at 05:30 AM, Alwar), Height- 5Ft., Slim, Fair, Sober & Smart, Education- M.A. (Hindi), B.Ed., Gotra : Self- Sangarwasiya, Mama- Chaudhary, Contact : 213, Vivek Vihar, Scheme No. 10A, Alwar-301001, Mob.: 9982154002, 9982993200 *(Nov.)*

★ **Shubhangi Jain** D/o Sh. S.K. Jain, DoB 1.08.1995 (at Aligarh), Height- 5'-1.5", Education- Bachelor Degree in Animation, Working as Free Lance, Gotra : Sataria, Contact : Flat No. 603, Bldg. No. 5, Kenwood Tower, Kenwood Park, Mira Bhayander Road, Mira Road (East), Dist. Thane-401107 (Maharashtra), Ph.: 02228127404, Mob.: 9969019635, Email : skjain5607@yahoo.in *(Nov.)*

★ **Anamika Jain** D/o Sh. Ravindra Kumar Jain, DoB 04.10.1995 (at 1:30 pm, Kota), Height 5ft., Education- M.A. (English), Gotra : Self- Barwasia, Mama- Bhorangiya, Contact : 202, Manak Bhawan, Janak Puri, Mala Road, Kota Jn., Mob.: 9413276409 , 9462633921 *(Dec.)*

★ **Surbhi Jain** D/o Sh J.K. Jain, DoB 23.09.1993 (at 7:55 am, Gangapur City), Height 5Ft., Education- MBA (XIME Bangalore), B.Tech. (RCEW Jaipur), Occupation- Senior Associate HR, Mindtree Limited, Bangalore, Gotra : Self- Rajoriya, Mama- Choudhary, Contact : E1/325, Chitrakoot, Gandhi Path, Jaipur-302021, Mob.: 9887734133, 8769421338 *(Dec.)*

★ **Paridhi Jain** D/o Late Sh. Dinesh Kumar Jain, DoB 25.03.1993 (at 9:20 am, Balghat, Dist. Sawai Madhopur), Height- 5'-3", Education- B.Tech (EC), Occupation- Sr. Data Analysts in TCS, Gurgaon, Gotra : Self- Bhataria, Mama- Kotia, Contact : Nidhi Jain (Jaipur) : 8003318081, Email : jainnidhi766@gmail.com *(Dec.)*

★ **Seema Jain** D/o Sh. Dinesh Chand Jain, DoB 06.03.1990 (at Jaipur), Height- 5'-2", Education- MCA, Gotra : Self- Belanvasiya, Mama- Bhatariya, Contact : B-34, Karamchari Colony, Alwar, Mob.: 7891002125, 9461774268, Email : jain2218@gmail.com *(Dec.)*

★ **Khushbu Jain** D/o Sh. Prakash Chand Jain, DoB 24.07.1994 (at 5:25 am, Bharatpur), Height- 5'-4", Fair Colour, Education- M.Sc., B.Ed. (Mathematics), Presently Working as Private Teacher in Silver Oak School, Alwar, Gotra : Self- Badwasiya, Mama- Kher, Contact : 2/240, Kala Kuan, Alwar, Mob.: 9413736672, 6377312109 *(Dec.)*

★ **Megha Jain** (Manglik) D/o Sh. Prakash Chand Jain, DoB 23.07.1993 (at 10:20 am, Alwar), Fair Complexion, Education- B.Com, Pursuing CA Final, Gotra : Self- Athwarsia, Mama- Ambia, Contact : FN 001, Galaxy Appartment, New Friends Colony, Jaipur Road, Alwar, Mob.: 9413025049, 7014958699 *(Dec.)*

★ **Deepti Jain** D/o Sh. Dinesh Chand Jain, DoB 15.03.1992 (at 7:15 am, Agra), Height- 5'-2", Education- M.Phill, M.A. & B.Ed, Occupation- Asstt. Teacher in Lt Grade, Goverment Inter College, Mathura, Gotra : Self- Bhadarwasia, Mama- Badwasia, Contact : Sh. Dinesh Chand Jain, 43/224, Jain Gali, Sikandra, Agra (U.P.), Mob.: 8445590908, 9837689334, Email : ashumdj1990@gmail.com *(Dec.)*

★ **Pooja Jain** D/o Sh. Kamal Kishore Jain, DoB 01.08.1991, Height- 5'-3", Education- M.A. (Hindi, Political Science), B.Ed, Gotra : Self- Daduriya, Mama- Nageshriya, Contact : Plot No. 14, Dronpuri Singh Marg, Jaipur, Mob.: 9461588831, 9314916286 *(Dec.)*

★ **Monika Jain** D/o Sh. Vijay Kumar Jain, DoB 11.01.1993, Height- 5'-3", Education- M.Com. FDMSD, Fair Colour, Gotra : Self- Choudbambar, Mama- Kotiya, Contact : 93/58, Agarwal Farm, Mansarovar, Jaipur, Mob.: 9799397701, Email : vijayjainraj@gmail.com *(Dec.)*

वधू की तलाश

कृपया दहेज लोभी पत्रिका में प्रकाशनार्थ विज्ञापन न भेजें

★ **प्राशु जैन** पुत्र श्री अनिल कुमार जैन, जन्मतिथि 22.05.1993 (प्रातः 9:05, फ़िरोज़ाबाद), लम्बाई– 5'–10'', शिक्षा– बी.कॉम, व्यवसाय– गवर्नमेंट कांट्रेक्टर, आय– 50,000/– प्रति माह, गोत्र : स्वयं– बारोलिया, मामा– गंगवाल, संपर्क : 58ए/36/1बी, जैन मंदिर के पीछे, ज्योति नगर, अर्जुन नगर, आगरा–282001, मो.: 9837662521, 9897492759 *(नवम्बर)*

★ **देवेश जैन** पुत्र श्री वीरेन्द्र कुमार जैन, जन्मतिथि 30.07.1992 (सायं 7:54), रंग गोरा, लम्बाई– 5'–10.5'', शिक्षा– बी.टेक, एम.बी.ए फाइनेंस, सी.एफ.ए. लेबिल रनिंग, बैंक ऑफ अमेरिका, गुडगांव इन्वेस्टमेन्ट बैंकिंग एनलायजिस्ट, पैकेज– 13.50 लाख

वार्षिक, गोत्र : स्वयं– चाँदपुरिया, मामा– बड़ोनिया, संपर्क : वीरेन्द्र जैन, चनाकोठार, कम्पू, ग्वालियर–474009, मो.: 9826074682 *(नवम्बर)*

★ **मंयक जैन** पुत्र श्री अक्षय कुमार जैन, जन्मतिथि 30.04.1991, कद– 6फुट, शिक्षा– बी.ए., पॉलिटेक्निक डिप्लोमा, व्यवसाय– रेडिमेड गारमेन्ट शॉप, आय– 25 हजार प्रति माह, गोत्र : स्वयं– चाँदपुरिया, मामा– बयानिया, संपर्क : 3–ई–1, दादाबाड़ी, कोटा, मो.: 8619111409, 9413201155 *(दिसम्बर)*

★ **पीयूष जैन** पुत्र श्री अभय जैन, जन्मतिथि 15.07.1986, कद– 5'–7'' (दोपहर 1:30 बजे, आगरा), शिक्षा– बी.कॉम., एमबीए, फेडरल बैंक में एसिसटेंट मैनेजर, गोत्र : स्वयं– बारौलिया, मामा– खैर, संपर्क : 2–बी–10, महावीर नगर तृतीय, कोटा, मो.: 9352602503 *(दिसम्बर)*

★ **Tarun Jain** S/o Sh. Anil Kumar Jain, DoB 10.10.1991 (at 10:35 AM, Alwar), Height 5'-8", Education- B.Tech/M.Tech from IIT Kharagpur, Occupation- Working in Amsterdam (Netherlands), Gotra : Self- Belanvasiya, Mama- Chorbambar, Contact : 71/248, Patel Marg, Mansarovar, Jaipur, Mob.: 9413305328, Email : cvinwrjp@gmail.com *(Nov.)*

★ **Sumit Jain** S/o Sh. Lochan Das Jain, DoB 05.06.1991 (at 7:30 pm, Morena), Height- 5'-9", Fair Complexion, Education- BE (Mech.) from IET (devi Ahilya Vishwavidyalaya), Indore, Occupation- Auditor in Ministry of Defence (Finance), Package 6.5 LPA, Gotra : Self- Baribar, Mama- Kashmiria, Contact : Near K.S. Mill Nainagarh Road, Morena (M.P), Mob.: 8463022852, 9755284934 *(Nov.)*

★ **Sharad Jain** S/o Sh. Madan Mohan Jain, DoB 07.02.1988 (at 1:10 am, New Delhi), Height- 5'-7", Education- MBA (Marketing), Working as Marketing Manager in Infedo Pvt. Ltd. having Income 16 LPA, Gotra : Self- Kotiya, Mama- Shreepat, Contact : 9971398320, 9811681949, Email : sharadjain_2009@live.com *(Nov.)*

★ **Vishal Jain** S/o Sh. Ashok Kumar Jain, DoB 08.08.1993 (at 4:40 AM, Bandikui (Dausa)), Height- 5'-7", Education- B.Com., M.Com., Gotra : Self- Chandpuriya, Mama- Shreepat, Profession- Jain General & Provision Store Bandikui, Income- 10 LPA, Contact : Jain Bhawan, Behind Panchayat Samiti, Ward No. 29, Bandikui, Mob.: 9414627193, 9784805709, 7014187585, Email : khushal.jain1212@gmail.com *(Nov.)*

★ **Anurag Jain** S/o Sh. Ashok Kumar Jain, DoB 23.03.1992 (at 11:26 pm), Height 5'-9.5", Education- M.Tech.(IT) from IIIT Allahabad, Occupation- Assistant Professor in Govt. Engg. College, Ajmer, Salary- Rs. 71,000 per month, Gotra : Self- Rajoriya, Mama- Baroliya, Contact : Seth Godam, Sainath Khirikiya, Karauli, Mob.: 9460952470, 9461152595 *(Nov.)*

★ **Nitin Jain** S/o Sh. Dilip Kumar Jain, DoB 10.09.1989 (at 11:45 pm, Agra), Height- 5'-6", Education- M.Com, B.Com, Occupation- Tender Manager in Private Limited Company, Gotra : Self- Sangeswariya, Mama- Rajoriya, Contact : 43/228, Jain Street, Sikandra, Agra- 282007, Mob.: 8171662074, 8279511785 *(Nov.)*

★ **Bipin Jain** S/o Late Sh. Shubhash Chand Jain, DoB 26.11.1989 (at 8:40 am, Agra), Height 5'-9", Education- M.Com, Occupation- Self Employed (Sales Tax And Income Tax), Gotra : Self- Kotiya, Mama- Nageshwariya, Contact : H.No. 30, Shanti Nagar, Opp. Raj Garden, Maruti Estate, Albatiya Road, Bodla, Agra, Mob.: 9410424715, 9368681313, 9368196568 *(Nov.)*

★ **Deepak Jain** S/o Late Sh. Mahendra Kumar Jain, DoB 04.07.1992 (at 02:40 pm, Mandawar Mahwa Road), Height- 5'-7", Education- B.A, Profession- Business (Iron & Hardware Shop), Income- 5 LPA, Gotra : Self- Badwasiya, Mama- Rajeshwari, Contact : Smt. Laita Jain, Mob.: 8290881975, 9413676243, Email : cpjain2185@gmail.com *(Nov.)*

★ **Nakul Jain** (Manglik) S/o Late Sh. Narendra Kumar Jain, DoB 28.03.1992 (at 1:45 pm, Rajkot Gujarat), Height 5'-1", Education- MBA (Finance), Occupation- Assistant Manager (Scale-1) in Nationalized Bank in Dwarka, New Delhi, Income 6LPA, Gotra : Mittal, Contact : Smt. Manju Jain, 18A, Dwarka, New Delhi-110078, Mob.: 9602064645, 8058001584 *(Nov.)*

★ **Himanshu** (Anshik Manglik) S/o Sh. A.K. Jain, DoB 14.03.1992 (at 2:55 PM), Height- 173 cms., Education- B.Com., MBA, Working as a Finance Executive in Global Indian International Pvt. Ltd., Noida, Income- 4 LPA, Gotra : Ambia, Contact : C-57, Anand Vihar Colony, Delhi-110092, Mob.: 9891205385, 9711886852, Email : jain57anil@gmail.com *(Nov.)*

★ **Anubhav Jain** S/o Sh. Arvind Kumar Jain, DoB 08.09.1992 (at 10:45 PM, Alwar), Height- 5'-7", Education- B.Tech, M.Tech, ICT Jaipur, Occupation- Senior Data Developer, Dunnhumby Gurugram, Package- 11 LPA, Gotra : Self- Janthuriya, Mama- Sagarwasiya, Contact : Sh. Arvind Kumar Jain, D-72, H.M.M Nagar, Alwar, Mob.: 9414367288 *(Nov.)*

★ **Ankit Jain** S/o Late Sh. Subhash Chand Jain, DoB 01.10.1990, Height- 5'-9", Fair Colour, Education- M.A., B.Ed., Working as First Grade School Lecturer (Chittorgarh), Salary 57,000/- Per Month, Gotra : Self- Gindoriya, Mama- Nangeswariya, Contact :

Mandawar (Dausa) 9694707750, 8058226112, Email-jainankit00310@gmail .com *(Nov.)*

★ **Manish Jain** S/o Sh. Diwan Kapoor Chand Jain, DoB 09.05.1988 (at 01:10 pm, Alwar), Height- 5'-6", Education- B.Tech (ECE) from NIT Jaipur, Gold Medalist, Presently Working as Sr. Lead UI/UX Associate at Noida, Package 32.5 LPA (Fixed component), Gotra : Self- Ambiya, Mama- Chaudhary, Contact : Diwan Ji Ki Haweli, Baderia Padi, In front of Saint Niwas, Alwar, Mob.: 6378381033, 9783565383, 7303079218, Email : manish9may@gmail.com *(Nov.)*

★ **Sparsh Jain** S/o Sh. Sunil Kumar Jain, DoB 16.08.1989 (at 4:30pm, Kherli) Height- 5'-3", Education- M.Com., Company Secretary, Working as Company Secretary in M/s. Dhabriya Polywood Ltd., Jaipur, Gotra : Self- Kotia, Mama- Dhati, Contact : B-48, Vidhya Nagar, Jagatpura, Jaipur, Mob.: 96602 55730, Email : skjainb48@gmail.com *(Nov.)*

★ **Abhilash Jain** S/o Sh. Surendra Kumar Jain, DOB 07.01.1993 (at 01:33 AM, Alwar), Height 5'-11", Education- B.Tech (E.C), Job- Software Engineer in HCL (Google), Gurgaon, Income- Rs. 4.50 LPA, Gotra : Self- Nageshwaria, Mama- Angrus, Contact : Sh. S.K. Jain, 3/61, NEB Housing Board, Alwar, Mob.: 9828865133, 8890566211 *(Nov.)*

★ **Kartik Jain** S/o Sh. Naresh Kumar Jain, DoB 23.08.1990 (at 10:40 pm, Kalol, Dist. Gandhi Nagar), Height- 5'-8", Education- B.Tech. (Electronics & Comm.), Working in Multinational Company QX in Ahmedabad, Gotra : Nolathia, Mama- Chandpuriya, Contact : A-201, Prathana Greens Society, Near Pramukh Aura, 'KH' Road, Saragasan Cross Road, Gandhi Nagar, Gujarat, Mob.: 9427626626, 9428910872, E-mail : ndjain2@gmail.com *(Nov.)*

★ **Nimesh Jain** S/o Sh. Anil Kumar Jain, DoB 12.05.1991 (at 6:30 am, Delhi), Height- 5'-9", Education- B.Com. MBA (Finance), Occupation- Own Business, Income 12 LPA, Contact : Sh. Anil Kumar Jain, 26/69, Shakti Nagar, Delhi-110007, Mob.: 9811076884 *(Nov.)*

★ **Anuj Jain** S/o Sh. Rakesh Kumar Jain, DoB 26.10.1991 (at 5:58 pm, Alwar), Height- 5'-11", Education- B.B.A., C.S. Executive Pass, Occupation- Business, Gotra : Ambia, Mama- Rajoriya, Contact : Mehtab Singh Ka Nohra, Kalawati Street, Alwar, Mob.: 9414018049, 8107606969 *(Nov.)*

★ **Shubham Babu Jain** (Manglik) S/o Sh. Sunil Kumar Jain, DoB 10.08.1993, Height- 5'-8", Colour Fair, Job- MCD in Licence Department and Self Company, Income- 50,000/- per month, Gotra : Padmavati, Contact : Riks Ganj, Fariha, Firozabad, Mob.: 9528335309, 7618554494 *(Nov.)*

★ **Dr. Piyush Jain** S/o Sh. Pavan Kumar Jain, DoB 10.01.1990 (at 3:45 am, Jaipur), Height- 5'-6", Education- MBBS from Medical College, Jodhpur, MS from JLN Medical College, Ajmer, Gotra : Bayania, Mama- Kotia, Contact : 64/314, Heera Path, Mansarovar, Jaipur, Mob.: 9460685452, 9413342332, 9829031972 *(Nov.)*

★ **Bhupendra Jain** S/o Sh. Paras Chand Jain, DoB 05.02.1990, Education- MA, B.Ed., LLB, Occupation- Advocate in Rajasthan High Court at Jaipur Bench, Gotra : Pawatiya, Mama- Nageswariya, Contact : E-119, Vaishali Nagar, Jaipur, Mob.: 8905927688, 9636422416 *(Nov.)*

★ **Sonu Jain** (Anay Jain) S/o Sh. Kedar Chand Jain, DoB 01.05.1986 (at 5:45 am, Alwar), Height- 5'-7", Education- M.Com., Diploma in Industrial Computer Accountant (ICA), Occupation- Sr. Accountant in Construction Company, Package- 5.75 LPA, Gotra : Self- Choudhary, Mama- Salavadiya, Contact : 429, Vijay Nagar, Alwar-301001, Mob.: 9314490659, 9351409005 *(Nov.)*

★ **Ashish Jain** S/o Sh. Pawan Kumar Jain, DoB 01.04.1990 (at 1:55 PM, Kota), Height- 5'-5.5", Education- B.Tech. (Civil), Occupation- Project Engineer in a renowned Construction Co. at Silvassa, Income- 6.30 LPA, Gotra : Self- Chaurbambar, Mama- Kathumaria, Contact : 36, Basant Vihar Special, Behind Modi College, Kota-324009, Mob.: 9829242662, 6376463993, Email : pawankumarjain56@yahoo.com, pawan42662@gmail.com *(Nov.)*

★ **Ravi Jain** S/o Sh. Pradeep Jain, DoB 12.9.1986 (at 7:30pm, Kota), Height- 5'-8'', Education- BE (Electrical), Job- Engineer at Hind Construction Ltd., Income 5 LPA, Gotra : Self - Chaurbambar, Mama- Baderiya, Contact : Behind Sarvodaya Convent School, Adarsh Colony, Kherli Phatak, Kota-324001, Mob.: 9928888727, 8209471961, Email : neetajainkota1@gmail.com *(Nov.)*

★ **Pavan Kumar Jain** S/o Sh. Jainendra Kumar Jain, DoB 12.03.1990, Height 5'-5", Education- B.A. & ITI (Electrician), Occupation- Retail Shop Keeper, Nithar, Gotra : Self- Pawatiya, Mama- Rajoria, Contact : Vill. Nithar, Teh.- Bhusawar, Dist. Bharatpur-321409, Mob.: 7597270830 *(Nov.)*

★ **Rahul Jain** S/o Sh. Sheel Chand Jain, DoB 19.08.1990 (at 05:00 pm), Height- 5'-9", Educational- M.Com from IGNOU, Occupation- Working in Magic Auto Pvt Ltd. (Maruti Authorised Dealership) as a Team Manager, Salary Package 5.25 LPA, Gotra : Self- Mundare, Mama- Ved Varashtak, Contact : RZG-98B, 1st Floor, Gali No.6, Near Shyam Mandir, Rajnagar Part-II, Palam

Colony, New Delhi-110077, Mob.: 9718967990, 9911218537, Email : rrjain619@gmail.com *(Nov.)*

★ **Gourav Jain** S/o Sh. Bhag Chand Jain, DoB 15.11.1991, Height- 5'-8", Educational- B.Com., MBA (Marketing), Occupation- Working with HDFC Bank (PB), Gotra : Self- Bhadkoliya, Mama- Mahatiya, Contact : Shree Anoop Electricals, Kathumar Road, Kherli, Alwar, Mob.: 8949119922, 9414796449 *(Nov.)*

★ **Arihant Jain** S/o Sh. S.K. Jain, DoB 03.06.1990 (at 8:46 am, Aligarh), Height- 5'-3.5", Educational- B.Tech. (Electronics), MBA (Marketing), Occupation- Dy. Manager in M/s National Payment Corporation of India (under Reserve Bank of India), Mumbai, Income- 7.50 LPA, Gotra : Self- Sattaria, Contact : Flat No. 603, Bldg. No. 5, Kenwood Park, Mira Bhayander Road, Mira Road (East), Distt. Thane-401107, Maharastra, Ph.: 02228127404, Mob.: 9969019635, Email : skjain5607@yahoo.in *(Nov.)*

★ **Sudhir Jain** S/o Sh. Sumer Chand Jain, DoB 17.03.1988 (at Alwar), Height 5'-11", Education- M.Com, MBA, LLB, Occupation- Working in NBC Bearings, Jaipur (C. K. Birla Group), Gotra : Self- Sangarwasiya, Mama- Chaudhary, Contact : 213, Vivek Vihar, Scheme No. 10A, Distt. Alwar-301001, Mob.: 9982154002 *(Nov.)*

★ **Ropil Jain** S/o Sh. Vijay Chand Jain, DoB 25.10.1990 (at Bharatpur), Height- 5'-6", Education- B.Tech. (E.C.E), Occupation- Working as Web Developer in Appic Softwares, Jaipur, Income- 3 LPA, Gotra : Self- Kheir, Mama- Behatyaria, Contact : Goverdhan Mod, Near Jain Mandir, Deeg (Bharatpur), Mob.: 9509051123, 8413160941 *(Nov.)*

★ **Akash Jain** S/o Sh. Rishabh Chand Jain, DoB 12.11.1993, Height 5'-8", Education- M.Sc., B.Ed., M.Ed. (Pursue), Teacher in Northern Railway School, Tundla, Income 6 LPA, Gotra : Self- Januthariya, Mama- Rajoriya, Contact : H.No. 1454, Avas Vikas Colony, Sector-7, Agra, Mob.: 9897710872 *(Dec.)*

★ **Anubhav Jain** S/o Sh. Arvind Kumar Jain, DoB 08.09.1992 (at 10:45 PM, Alwar), Height 5'-7", Education- B.Tech., M.Tech, ICT Jaipur, Occupation- Senior Data Developer, Dunnhumby Gurugram, Package 11 LPA, Gotra : Self- Janthuriya, Mama- Sagarwasiya, Contact : D-72, H.M.M Nagar, Alwar, Mob.: 9414367288 *(Dec.)*

★ **Ankit Jain** S/o Sh. Ashok Kumar Jain, DoB 20.01.1987, Height 5'-6", Education- Bachelor of Arts, Extra Qualification- Computer Hardware & Installation, Gotra : Self- Khair, Maternal- Kashmiriya, Occupation- Operation Executive in ESS KAY Fincorp Ltd., Adarsh Plaza, Khasa Kothi Circle, Bani Park, Jaipur, Salary- 35000/-pm with Incentive, Contact : E-638, Ranjeet Nagar, Bharatpur (Raj.), Mob.: 6376309175, 9461052948 *(Dec.)*

★ **Tarun Jain** (Manglik) S/o Sh. Ravindra Kumar Jain, DoB 02.05.1988 (at 9:30am, Gangapur City), Height 5'-3", Education- B.Tech. (CS), Self Buisness- Patanjali Store & Distributorship, Income 4 LPA, Gotra : Self- Barwasia, Mama- Bhorangiya, Contact : 202, Manak Bhawan, Janak Puri, Mala Road, Kota Jn., Mob.: 9413276409, 9462633921 *(Dec.)*

★ **Prince Kumar Jain** (Manglik) S/o Sh. Yogesh Chand Jain, DoB 02.03.1989, Height 5'-6", Education- MBA, Working as Relationship Officer (Finance) in AU Finance India Ltd., Alwar, Package 4 LPA, Gotra : Self- Bayaniya, Mama- Maimunda, Contact : C-326, Surya Nagar, Alwar (Raj), Mob.: 9414857271 *(Dec.)*

★ **Rohit Jain** S/o Sh. Gajendra Kumar Jain, DoB 05.10.1990 (at 7:25pm, Kota), Height- 5'-11", Education- B.Tech., NIT Allahabad, Currently Working with Zest Money, Income 28LPA, Located in Bengaluru, Gotra : Self- Baderia, Mama- Baroliya, Contact : 9425842898 *(Dec.)*

★ **Sameer Jain** S/o Sh. Ashok Jain, DoB 20.11.1986 (at 10:10 AM, Alwar), Height- 6 Ft., Education- B.Tech (IT), Occupation- IT Professional in Jaipur, Gotra : Self- Mastdengiya Choudhary, Mama- Sarngdengiya, Contact : 422, Lajpat Nagar, Alwar-301001, Mob.: 9461334271, 9413024271, Email : ashokjainschalwar@gmail.com *(Dec.)*

★ **Nilesh Jain** S/o Sh. Rajendra Kumar Jain, DoB 30.06.1985 (at 1:22 pm, Ajmer), Height 5'-8", Education- M.Com., MBA, Occupation- Working as a State Head at Manba Finance Ltd. Co. Jaipur, Income- 10.50 LPA, Gotra : Self- Maimunda, Mama- Chorbambar, Contact : 11/40, Kaveri Path, Mansarovar, Jaipur, Mob.: 9983444198, 9928954688 *(Dec.)*

★ **Saurabh Jain,** DoB 24.12.1989 (at Bharatpur), Height 5'-8", Education- MCA, Occupation- Outstrip Infotech Pvt. Ltd., Gotra : Self- Kotia, Mama- Kher, Contact : Sh. Om Prakash Jain (Retd. Tehsildar), Jain Bhawan, Near Asim Kripa Guest House, Pai Bagh, Bharatpur, Mob.: 9785566636, 9928529444 *(Dec.)*

★ **Tarun Jain** S/o Sh. Deep Chand Jain, DoB 06.09.1989 (at 10:00 pm, Kherli), Height 5'-7", Education- MCA, Occupation- Web Designer Developers, Income- 3.60 LPA, Gotra : Self- Salavadia, Mama- Bahatariya, Contact : Sh. Deep Chand Jain, 3/176, Kala Kuna Housing Board, Alwar, Mob.: 941499682 *(Dec.)*

★ **Puru Jain** S/o Sh. Anil Kumar Jain, DoB 23.05.1992

(at 3:20 am, Kota), Height- 5'-8", Education- B.Tech (CS), Occupation- Associated Engineer in Elenjical Solution (S. Africa) Company at Mumbai, Package 15 LPA, Gotra : Self- Gandharve, Mama- Baroliya, Contact : Sh. Anil Kumar Jain, Eakta Cottage, Enited Colony, Opp. Petrol Pump, Station Road, Kota Jn., Mob.: 9460813350, 9460813349 *(Dec.)*

★ **Himanshu Jain** S/o Sh. Surendra Kumar Jain, DoB 30.07.1992 (at 11.00 PM), Height- 5'-7", Fair Colour, Educational- M.Com., Occupation- Consultancy in the field of Taxation IncomeTax, GST other work related to taxation, Gotra : Self- Lohkarodia, Mama- Salavadiya, Contact : C-158, Ranjeet Nagar, Bharatpur-321001, Ph.: 05644-237035, Mob.: 9413309050 *(Dec.)*

★ **Bhanesh Jain** (Bhanu Jain) S/o Sh. Mahesh Chand Jain, DoB 27.07.1989, Height- 5'-4", Education- DRT (Diploma in Radiation Technology), Profession- Working as Radiographer in Govt. TV Hospital, Jaipur, Gotra : Self- Nangesuria, Mama- Rajoriya, Contact : Near New Telephone Exchange, Siddhartha Nagar, Hindaun City, Karauli-322230, Mob.: 9413182622, 9460441986, Email : bhaneshjain@gmail.com *(Dec.)*

★ **Vijay Jain** (DevkiNandan) (Divorcee) S/o Sh. Mahesh Chand Jain, DoB 11.11.1985 (at 12.45pm, Hindaun City), Height- 5'-8", Education- MCA (IIIM Mansrover, Jaipur) in IGNOU, Profession- Working at Triazine Software Pvt. Ltd. as Software Engineer, Income- 7.00-7.50 LPA, Gotra : Self- Nangesuria, Mama- Rajoriya, Contact : Near New Telephone Exchange, Siddhartha Nagar, Hindaun City, Karauli-322230, Mob.: 9468585522, 9460441986, Email : jain.vijay605@ gmail.com *(Dec.)*

★ **Saurabh Jain** S/o Sh. Yogesh Jain, DoB 16.12.1989 (at 02:31 pm, Agra), Height: 5'- 8", Education: B. Tech, Occupation: Guard (Train Manager) in Indian Railway (Govt. Job), Gotra: Self- Sarang, Mama- Nageshwaria, Contact: 15, Subhash Nagar, Near Maruti Estate, Bodla, Agra, Mob.: 7520519414, 8410756875 *(Dec.)*

★ **Rahul Jain** S/o Sh. Vijay Kumar Jain, DoB 27.08.1994, Height 5'-7", Education- B.Com., MBA, Working in HDFC Bank Ltd., Agra, Salary- Rs. 20,000/- p.m., Gotra : Self- Bhadarwasia, Mama- Gindora Bux, Contact : 43/223, Near Jain Mandir, Jain Gali, Sikandra, Agra-282007, Mob.: 9897303171, E-mail : abhajain2018@gmail.com *(Dec.)*

★ **Karan Jain** S/o Sh. Pankaj Jain, DoB 07.07.1994 (at 10:16 pm, Agra), Height- 5'-6", Education- B.Com., Occupation- Businessman, running his own factory, Pankaj Industries, Gotra : Palliwal, Contact : Flat No. 305, IIIrd Floor, Aashirwad Residency, New Vijay Nagar Colony, Agra -282004, Mob.: 9319795225, 9258547100 *(Dec.)*

★ **Kapil Kumar Jain** S/o Sh. Dinesh Chand Jain, DoB- 04.03.1993 (at 11 :30 am, Jaipur), Height 5'-5", Gotra : Self- Khair, Mama- Nangeshweria, Education- Polytechnic Diploma (Mechanical Engineering), Computer Diploma + RS-CIT, Graduation Degree, Occupation- Working in a Private Company (Jaipur), Contact : H.No. 245, Shiv Colony, Mehandipur Balaji, Dausa, Mob.: 9829428416, 9784761984, 8955011011 (Whatsapp), Email : jkapil040@gmail.com *(Dec.)*

★ **Prakshal Jain** S/o Sh. Vijay Kumar Jain, DoB- 30.08.1992 (at 8:15 am), Height 6'-2", Educational- DISA, CCA, CA, CS, B.Com., Occupation- Partner in CA Firm, Rajvanshi & Associates, Jaipur, Gotra : Self- Rajoria, Mama- Bhatariya, Contact : Sh. Vijay Kumar Jain, Advocate Raj. High Court Jodhpur, House No. 16/538, Chopasani Housing Board, 17 Sector, Main Road, Behind Shri Riddhi Siddhi Ganesh Temple, Jodhpur-342008, Ph.: 0291-2753457, Mob.: 9413649165, Whatsapp No.: 8107593346, Email : prakshaljain27@gmail.com *(Dec.)*

★ **Palak Jain** DoB- 19.11.1991 (at 2:35 pm), Height- 5'-7", Education- B.Com., MBA, Occupation- Working as a Process Analyst in Tata Consultancy Service, Ahmedabad, Package 4.20 LPA, Gotra : Self- Baderia, Mama- Barolia, Contact : Sh. Mishri Lal Ji Jain, H.No. 1724, Sector-7, Avas Vikas Colony, Bodla, Agra-282007, Mob.: 9319179796, 9758010189 *(Dec.)*

★ **Deepak Jain** S/o Late Sh. Narendra Kumar Jain, DoB- 07.09.1989, Height- 5'-11", Education- B.A., ITI, Occupation- Self Business (Deepak Ref. and Electricals, Kekadi), Gotra : Self- Kotiya, Mama- Ladoriya, Contact : H.No. 17, Infront of Bajaj Mill, Krishna Nagar, Ajmer Road, Kekadi, Dist. Ajmer-305407, Mob.: 9214923269 *(Dec.)*

★ **Naveen Kumar Jain** S/o Sh. Dharam Chand Jain, DoB- 12.07.1989, Height- 5'-6", Education- Sr. Secondary, Income- 3 LPA, Gotra : Self- Dhati, Mama- Salabdiya, Contact : Vill. Bonl, Tehsil Todabhim, Dist. Karauli, Mob.: 9571007230, 7976036315, Email : jainmahwa@gmail.com *(Dec.)*

★ **Dinesh Jain** S/o Sh. Nirmal Kumar Jain, DoB- 10.05.1991, Height- 5'-10", Education- B.Tech. (Hons.), Occupation- Software Engineer at Banglore, Income- 23 LPA, Gotra : Self- Bahatria, Contact : Gandhi Path (W), Vaishali Nagar, Near Nymph Academy, Jaipur, Mob.: 9829180215, 6376320944 *(Dec.)*

* * * * *

बधाई

सुमत प्रकाश जैन 1990 से खेतान केमिकल्स और फर्टिलाइज़र्स लिमिटिड, इंदौर मे कार्यरत है, आज आप वरिष्ठ उपाध्यक्ष के पद पर रहते हुये इस कम्पनी के सात फ़र्टिलाइज़र (मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश, राजस्थान, छत्तीसगढ़ और गुजरात) और मध्य प्रदेश में दो सोया तेल के प्लान्ट्स के उत्पादन के कार्यप्रभार के साथ साथ कम्पनी के नये प्रोजंक्ट्स लगाने की भी जिम्मेदारी में संलग्न हैं। सुमत प्रकाश जी ने बताया कि वे गौरवान्वित है कि उनके कार्यकाल मे मध्य प्रदेश की फ़र्टिलाइज़र की इकाई एशिया महाद्वीप की सबसे बड़ी उत्पादन क्षमता का प्लान्ट है।

आपने आगे बताया की उत्पादन के साथ में आप कम्पनी से उत्सर्जित पर्यावरण पर भी ध्यान केन्द्रित करते है, और इस कारण से इनकी कम्पनी को 2005 से निरन्तर किसी न किसी इकाई को पर्यावरण, उत्पादकता अथवा Safety पर Fertilizer Association of India, National Safety Council से सम्मानित होते रहे है। इस वर्ष Fertilizer Association of India से आपकी निमरानी, डिस्ट्रिक्ट खरगोन, मध्य प्रदेश की इकाई को पर्यावरण के लिये Award दिया गया जिसे आपने नई दिल्ली में कृषि मंत्री, भारत सरकार सदानंद गोवडा के हाथों से प्राप्त किया।

पूज्य पिताजी एवं पूज्य माताजी की

पुण्य स्मृति में

स्व. श्री अमीर चन्द्र जी जैन *(कपड़े वाले)*
(स्वर्गवास 07-06-2009)

स्व. श्रीमती अशर्फी देवी जी जैन
(स्वर्गवास 16-10-2002)

श्रद्धावनत

पुत्र-पुत्रवधु :
विनोद कुमार जैन-सुधा जैन
पौत्र-पौत्रवधु :
निशान्त जैन (M.S.)-साक्षी जैन

पौत्री-दामाद :
मीनाक्षी-गौरव जैन
तनूजा जैन (SAP Cloud Consultant)
पड़पौत्री : रोशिका जैन

Residence :
406, Nai Basti, Sant Talkies Road,
Firozabad-283203

(M) 9412160859, 7060443607

प्रतिष्ठान :
जैन अमीर टैक्सटाइल
(जैन्ट्स क्लोथ डीलर)
रेमण्ड, रीड एण्ड टेलर एवं
उच्च कोटि के सूटिंग-शर्टिंग
Shop :
47, Chandra Shekar Market
Sadar Bazar, Firozabad-283203

KOTSONS

POWER & DISTRIBUTION

TRANSFORMERS

Export Award Winners

ACHIEVED **100%** GROWTH IN A SINGLE YEAR

KOTSONS PVT. LTD.

(AN ISO 9001 : 2008 & ISO 14001 : 2004 CERTIFIED COMPANY)

C-21, U.P.S.I.D.C., SITE- C, SIKANDRA,
AGRA - 282007 (U.P.) INDIA
Tel. : +91-562-3641818, 2641422
Fax : +91-562-2642059
e-mail : kotsons@kotsons.com
website : www.kotsons.com
Work at : Agra, Alwar & Uttaranchal

DNV

Accredited by the RvA

ISO 9001 QUALITY CERTIFIED
CERTIFICATE No. QSC-3360

RNI NO. RAJHIN/2012/47438 Postal Registration No. JAIPUR CITY/434/2019-21

RERA Registration No.
RAJ/P/2019/1054
www.rera.rajasthan.gov.in

Pearl
Build Trust & Loyalty

Pearl FORTUNE

3 BHK Boutique Apartments

Your perfect home is now at a landmark address.

Disclaimer: The image shown is indicative only and the actual view may differ from the one shown here.

● 16 Smart Home ● 3 BHK ● Vastu Friendly | Site : B-138, Mangal Marg, Bapu Nagar, Jaipur

Pearl
Build Trust & Loyalty

Pearl India Buildhome (P) Ltd.
"Pearl Suryavanshi", 401, A-5, Sardar Patel Marg,
C-Scheme, jaipur - 302001. INDIA. Ph.: +91 141 4014044

Dr. Raj Kumar Jain +91 9414054745
Ar. Vijay Kumar Jain +91 9829010092

2 Decades of Excellence | 3600 Villas + Plots | More than 500 Apartments | 22 'Pearl' Tower | 6 Townships

PRINTED MATTER
If Undelivered, please return to
श्री चन्द्रशेखर जैन *(संयोजक)*
86, श्री विहार कॉलोनी होटल क्लार्क,
आमेर के पीछे, जे.एल.एन. मार्ग,
जयपुर-302018 (राज.)

पत्रिका स्वामी - अखिल भारतीय पल्लीवाल जैन महासभा (रजि.) के लिए मुद्रक/प्रकाशक श्री चन्द्रशेखर जैन, 86, मगन विला, श्री विहार कॉलोनी, होटल क्लार्क आमेर के पीछे, जे.एल.एन. मार्ग, जयपुर-302018 ने गणेश आर्ट प्रिंटर्स, जे-51, कृष्णा मार्ग, सी-स्कीम, जयपुर से मुद्रित, सम्पादक : श्री प्रकाश चन्द जैन।